प्रेम पत्र

प्यारे भगोड़े कैदियों

सादर प्रणाम ।

आशा है आप मुझे इस बात के लिये क्षमा करेंगे कि मैंने आप पांचों (दिल्ली जेल से भागने वालों) को एक ही प्रेम पत्र लिखा है। इसका यह कारण नहीं है कि मेरे पास कागज और स्याही की कोई कमी है। परन्तु मेरी लेखनी से लिखे जाने वाले शब्द आप पाँचों पर एक बराबर फिट बैठते हैं।

यूं तो मैं आप सबकी बहुत इज्जत करता हूं क्योंकि आप डाकू सुन्दर सिंह जी के शिष्य रह चुके हैं। परन्तु इस बार कोर्ट की जेल से दिन दहाड़े भागने का जो करिश्मा आपने दिखाया उससे मेरा मन बहुत प्रभावित हुआ। मुझे पूरा विश्वास है कि आज आपने दाल-रोटी खाकर चैन की बंसी बजाई होगी। हो सकता है आपको फांसी के फन्दे के सपने आये हों। लेकिन मुझे खुशी है कि आपके ये सपने झूठे निकले।

जब मैंने आपको पहले-पहल देखा था तब मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ था कि आपकी उम्र तीस साल से ज्यादा नहीं है और इसलिए आप अभी चार पांच साल तक राजनीतिक पार्टियों के युवा अंग के सदस्य बन सकते हैं। हो सकता है ऐसा करने के लिए आपको मूंछें मुड़वानी पड़ें। परन्तु यह तो बहुत आसान काम है।

यह सवाल इतना बड़ा नहीं है कि आपको कैद करने वाले आई० जी० पुलिस आपके बिना क्या करेंगे? बल्कि यह सवाल है कि आप अपना जेब खर्च कैसे कमाएंगे? आप यह भी जान गए होंगे कि चुनाव के बाद खाने-पीने की सभी चीजों की कीमतें बढ़ गई हैं और बढ़ती जा रही हैं। इसलिए यह जरूरी है कि अब जेल की मुफ्त की रोटी की बजाय आपको मेहनत-मुशक्कत से पेट भरना पड़ेगा। अच्छा तो यह होता कि आप पूज्य जयप्रकाश नारायण जी से बातचीत कर लेते और उनके सामने स्मगलरों की तरह प्रायश्चित कर देते। तब आपको जेल से भागने की इतनी कड़ी कोशिश न करनी पड़ती क्योंकि आपको बिना शर्त रिहा कर दिया जाता।

अब आपके पास केवल एक चारा बाकी है। आप फौरन "भगोड़ा" यूनिवर्सिटी खोल लीजिये। इसकी फीस चाहे आप कितनी भी ज्यादा रखें पाठकों की कमी न रहेगी। सबसे पहले तो वे डाकू इसमें शामिल होना चाहेंगे जो जेल से भागना चाहते हैं। इसके अलावा इसमें वे सब पुलिस इंस्पेक्टर भी ट्रेनिंग लेना चाहेंगे जो कि सब डाकुओं को जेल में बन्द रखना चाहेंगे।

यदि यह तरकीब काम न करे तो यह न भूलिएगा कि आप सबको पकड़वाने के लिए सरकार ने एक-एक हजार रुपये का इनाम देना मंजूर किया है। आप सब एक दूसरे को पकड़वाकर यह इनाम ले सकते हैं। और हां, आपका जो एक साथी सोता रह गया उसको हर महीने वजीफा जेल में भेजना न भूलियेगा।

आपका शुभचिन्तक
चिल्ली

मुख पृष्ठ पर

मुझको ऐसी उम्मीद न थी,
यूं मेरी हवा चली होगी,
इज्जत से मैं बैठा हूंगा
ऊंची मेरी हस्ती होगी
तुम साथ मेरे खुद आओगे
न कोई जबरदस्ती होगी।

दीवाना

अंक : २४, २३ जून से २९ जून १९७७ तक
वर्ष : १३

सम्पादक : विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका : मंजुल गुप्ता
उपसहसम्पादक : कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-2

चन्दे की दरें
छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु०
द्विवार्षिक : ९५ रु०

लेखकों से
निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

मनमोहन गाडोडिया, सुजानगढ़

प्र० : काकीजी, कभी बेलन का प्रयोग आप पर भी करती हैं ?

उ० : नारी का शासन गया, नर का आया अब्ब,
बेलन रोटी बेलता, हमसे क्या मतलब्ब ।

गनेश प्रसाद 'प्यारा' दुलियाजान (असम)

प्र० : अगर हिप्पियों के बालों में जू पड़ जाएं तो ?

उ० : जुल्फों में जूं रेंगते, तब होता रोमांस,
सिर को खुजला कर करे, हिप्पिन के संग डांस ।

सुदर्शन भारती, चंडीगढ़

प्र० : जब कभी निशाना खाली जाता है तो क्या महसूस होता है ?

उ० : भाग्य सो जाता है, तो निशाना भी खो जाता है,
चुनाव में पराजित मंत्री सा मुंह हो जाता है ।

गुलाम मोहम्मद खुर्शीद, नागौर (राज०)

प्र० : पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है तो प्रेमिका ?

उ० : जीवन का साथी मिले, लेगी नाता जोड़,
परिक्रमा पति की करे, प्रेमी जी को छोड़ ।

राजेश कुमार शुक्ल, नागपुर

प्र० : वयस्क लड़के-लड़की साथ हों तो कैसे पहिचानें पति-पत्नी हैं या भाई-बहिन ?

उ० : झिझक छोड़कर पूछ लो, तोड़ दीजिये मौन,
कृपया परिचय दीजिये, यह मैडम हैं कौन ।

जोगिन्द्र कुमार अरोड़ा, जीन्द (हरियाणा)

प्र० : जीवन से ऊबकर आत्महत्या करना उचित है क्या ?

उ० : प्रभु का निर्मित खिलौना, नष्ट करें क्यों आप,
इसीलिए तो खुदकशी से लगता है पाप ।

नरेन्द्र कुमार 'निन्दी', कपूरथला

प्र० : नारी, हीरे के नैकलेस से अधिक महत्त्व मंगलसूत्र को क्यों देती है ?

उ० : हीरा-मोती में भरे, राग-रंग-अनुराग,
महिला-मंगल सूत्र में, मंगल और सुहाग ।

अशोक कुमार 'अजनबी', मंडी डब्बाली

प्र० : जब दोस्त, दोस्त न रह जाये तो ?

उ० : जब तक सच्चा मित्र था, तब तक थे अनुरक्त,
दुश्मन मत मानो उसे, अब हो जाउ विरक्त ।

भूपेन्द्रा गुरेरा, गीदड़वाहा

प्र० : काकाजी, दीवाना में आपकी शक्ल तो दिखाई देती 'कारतूस' कहां छिपे रहते हैं ?

उ० : केवल फोटो देखते, पढ़ने से परहेज,
कारतूस बिखरे पड़ें, देखो पूरा पेज ।

मोहम्मद अख्तर, बगिया (मुरादाबाद)

प्र० : जिन्दगी के किस मोड़ पर इंसान चोट खाता है ?

उ० : जब मदान्ध होकर चले, उल्टी-सीधी गोट,
तब जीवन-शतरंज में, खा जाता है चोट ।

चन्द्रकुमार बरनजानी, लखनऊ

प्र० : प्यार के सागर में, ज्वार-भाटा कब आते हैं ?

उ० : प्यारी भागे रूठक[illegible] प्रेमी हो कंजूस,
ज्वार और भा[illegible] [illegible]भी, होते हैं महसूस ।

कृष्णदेव पाण्डे, भवानीपुर, कलकत्ता

प्र० : यदि [illegible]ई प्रेमिका, आवेश में, गाल पर चांटा मार दे तो

उ० : बापू का सिद्धान्त यह, अपनाओ तत्काल,
करदो उसके सामने तुरत दूसरा गाल ।

जीवनलाल असरानी, इन्दौर

प्र० : मां के लिये कौन-सा शब्द अच्छा लगता है ?

उ० : मां, माता, मम्मी कहें, अम्मा, मैया कोइ,
सम्बोधन स्वीकारिये, जो मन भावे सोइ ।

संतोष कुमार जैन, सागर (म० प्र०)

प्र० : मई में बिना मानसून के असमय वर्षा क्यों हुई काका ?

उ० : बिन मौसम की वर्षा से, किसानों के दिल घायल हैं,
किन्तु बिचारे करें क्या, कृषि मंत्री तो 'बादल' हैं ।

बिहारीलाल मिश्र, जौनपुर

प्र० : एक अच्छे मित्र की तलाश में हूं, बताइये कहां मिलेगा ?

उ० : दीवाना में देख लो चिल्ली जी का चित्र,
नहीं मिलेगा विश्व में, इनसे अच्छा मित्र ।
इनसे अच्छा मित्र, अगर नाहीं कर देंगे,
तो फिर 'काका' फार्म दोस्ती का भर देंगे ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

जयप्रकाश नारायण

ों का गुलदस्ता लेकर जसलोक हस्पताल में जाइये और पी.को भेंट कीजिये ।पिछले सारे कुकर्म न दुहराने का प्रण लीजिये जनता सरकार आप पर मेहरबान होगी ।

सत्यनारायण

एक पंडित को बुलाकर श्री सत्यनारायण की कथा कराइये और बाद में २१ ब्राह्मणों को जिम्हाइये, आपके सब पाप माफ होंगे । स्वर्ग से आपको ले जाने के लिये इम्पाला कार आयेगी ।

नारायण महिमा

नकद नारायण

नकद नारायण का पुण्य प्राप्त करने के लिये डुप्लीकेट बही हाथ में लेकर तिजोरी के सामने ४२० मनकों की रुद्राक्ष माला लेकर ओइम् हेराफेरी स्वाहा मंत्र का जाप कीजिये, लक्ष्मी प्रसन्न होगी।
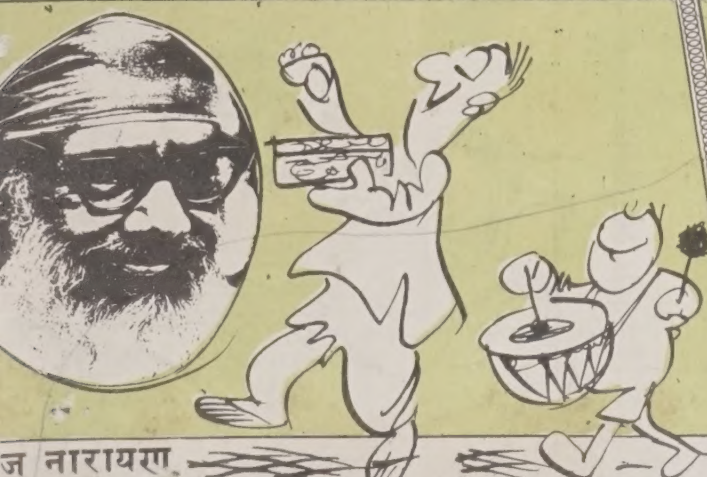
ज नारायण

रा के पेड़ क... टवा लेकर जाइये और राज नारायण जी मुँह में ठूंसिये अथवा जब वह बाल कटवाने वाले हों तो ड़ा लेकर जायें व उसे बजायें। राज नारायण प्रसन्न होकर आपके परिवार को कल्याण का वर देंगे ।

प्रेमा नारायण

सोते समय दिन में प्रेमा नारायण वाली पिक्चर के दृश्य याद कीजिये । सपने में देवी दर्शन देगी और......हरि ओइम तत्सत् !

आगये

कांग्रेसियों के सुनहरे दिन

लगभग ३० वर्ष सत्ता में रहने के बाद कांग्रेस सत्ताहीन हो गई है। कांग्रेसी नेताओं का जीवन मंत्रीत्व तथा चेयरमैनशिपों में पूरी तरह ढल गया था। वे अब जब स्वयं को बिना किसी पद के पा रहे हैं तो कुछ निराश तथा दुखी नजर आ रहे हैं। उनकी स्थिति ऐसी ही है जैसे उजाले से एकदम अंधेरे में जाने पर होती है। ठीक तरह कुछ दिखाई नहीं देता। दीवाना उन्हें आश्वासन देता है कि वास्तव में उनके अब सुनहरे दिन आ गए हैं। उठो, खुशी मनाओ! निराश व दुखी होने की जरूरत नहीं। अब वे स्वतंत्र हैं, उनके पास अब पर्याप्त फालतू टाइम होगा जिसमें वे सब कुछ कर सकते हैं जो सत्ताधारी होकर नहीं कर पाते थे। उदाहरणतया—

अपने पालतू जानवरों से इत्मीनान से बात कर सकते हैं।

फूल उगा सकते हैं और उनके नाम याद कर सकते हैं। (अंग्रेजी नाम)

रिश्तेदारों से मेलजोल बढ़ा सकते हैं।

स्वास्थ्य सुधार होगा।

...फिर शादी में अपने जनता पार्टी वाले दोस्तों को बुलाकर उन्हें ईर्ष्या की आग में जला कर तन्दूरी कर सकते हैं।

आप सुबह देर तक सो सकते हैं। खर्र खर्र के खर्राटों से कमरों की दीवारों व छत का पलस्तर उखाड़ सकते हैं।

मुफ्त में मजे लूट ले बेटा।

टी टी टी टी

चमचों की भीड़ नहीं होगी और आप चिड़ियों का कलरव सुन सकते हैं। मजा यह है कि चिड़ियां बदले में अपने किसी रिश्तेदार को नौकरी दिलाने की सिफारिश भी नहीं चाहेंगी।

मेरी धोती में यह दाग कैसा है ?

कपड़े लेते समय धोबी से लड़ने का मज़ा उठा सकते हैं।

सुबह-सुबह प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द उठा सकते हैं।

कहीं दूर जब दिन ढल जाये,
शाम का सूरज बदन चुराये,
मेरे ख्यालों की महफिल में...
कोई चुपके से आये।

KALASHOE
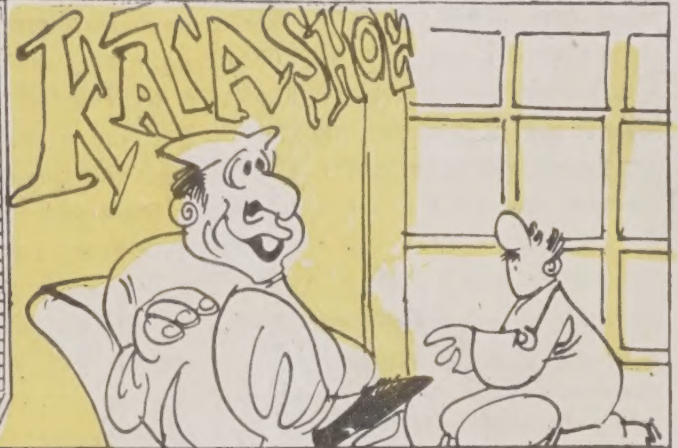
कई पक्के वोटर अपने बनाने के मौके मिलेंगे। सरकारी कारें न होने पर पैदल चल कर जूते घिसेंगे। कम से कम आपकी मार्केट का शू-सेल्जमैन तो आपका पक्का वोटर बन ही जायेगा जान-पहचान के बल पर।

अपने प्रश्न आज ही भेजिये

दिनेश कुमार मटाई—इन्दौर : मोटू और मोटा होता जा रहा है और पतलू और पतला। क्या डाक्टर झटका ने इन्हें कोई दवाई खिला दी है ?

उ० : चिल्ली ने इन्हें अपना डबल एक्शन लक्कड़ पत्थर हज़म चूर्ण खिला दिया है, जिससे यह दोनों हमारे आफिस की कुर्सियां तक खा जाते हैं, पर इसका असर दोनों पर उल्टा हो रहा है।

प्रीतम सिंह 'अकेला'—कानपुर : कुशल प्रशासन चलाने के लिए उच्च अधिकारियों से आदेश लेना जरूरी समझा जाए, तो क्या सरकारी कामों में इससे सुधार नहीं होगा ?

उ० : अवश्य होगा, जनता सरकार तो इसी उसूल पर चल रही है। पता लगा है कि रेल मंत्री के पास गांव के एक छोटे रेलवे स्टेशन से पत्र आया है, "शेर, प्लेटफ़ार्म पर एक मज़दूर को खाने के लिये उस पर हमला करने वाला है, बताइये क्या करें ?"

राजेन्द्र गोयल—कलकत्ता : ऊपर वाला कुछ नहीं देता, तब तो शिकायत होती ही है, पर ऊपर वाला कुछ दे तब भी शिकायत होती है क्या ?

उ० : कुछ ना पूछिये साहब उस शिकायत का माजरा, एक बार हम सिनेमा देख रहे थे कि ऊपर बालकोनी से हम पर पानी की बूंदें गिरने लगीं, हमने ऊंची आवाज़ में प्रोटेस्ट किया तो एक देवी जी अपने देवता स्वरूप से बोलीं, "एजी, सुनते हो, ! मैं कब से कह रही हूं, मुन्ने को ज़रा बाहर ले जाओ ना,"।

रामलाल—नई दिल्ली : मैं ऐसी तस्वीर बनाता हूँ कि मुंह से बोलने लगे। क्या आप मुझ से चाची जी की तस्वीर बनवाना पसन्द करेंगे ?

उ० : हम अकेली श्रीमति जी के बोलने से ही तंग हैं। अगर तस्वीर भी बोलने लगी तो अपना तो "बोलो ही राम" हो जाएगा।

गजानन शिवराय, शेलार, घाटकोपर : दुनिया में ऐसे कितने लोग हैं जो खुद को देवता समझते हैं ?

उ० : दीवाना के पाठकों और एजेंटों को निकाल कर संसार की सारी आबादी का हिसाब लगा लीजिये। इस अवसर पर हम आपको "बाईबल" की एक कहानी बताए : "अबू" नाम का एक छोटा बच्चा अपने बिस्तर पर आराम से लेटा था। तभी खिड़की खुली। चांद की किरणें दूधिया नदी की तरह बहती कमरे में आई। फूल बरसे और आकाश पर पवित्र घंटियाँ बजने लगीं और तभी एक फ़रिश्ता कमरे में आकर खिड़की पर बैठ गया। फ़रिश्ता कुछ लिख रहा था। अबू ने पूछा, 'क्या लिख रहे हो ?' फरिश्ते ने उत्तर दिया, 'मैं उन लोगों के नामों की सूची बना रहा हूं जो खुदा से प्यार करते हैं। अबू ने पूछा, 'क्या इस सूची में मेरा नाम है ?' फरिश्ते ने उत्तर दिया, 'नहीं।' बेचारा अबू उदास हो गया। दूसरी रात फ़रिश्ता फिर आया तो अबू के पूछने पर उसने बताया, मैं उन लोगों की सूची तैयार कर रहा हूं जो खुदा के बन्दों से प्यार करते हैं। अबू ने पूछा, क्या इस सूची में मेरा नाम है ? फ़रिश्ते ने उत्तर दिया, हाँ, इस सूची में तुम्हारा नाम सब से ऊपर है। तीसरी रात फिर फ़रिश्ता एक सूची तैयार कर रहा था। यह उन लोगों की सूची थी, जिनमे खुदा प्यार करता है। अबू ने पूछा, क्या इसमें मेरा नाम है ? फ़रिश्ते ने कहा, इसमें केवल तुम्हारा नाम है, और अबू पर फूलों की वर्षा शुरू हो गई। अब आप किसी से पूछिये, कौन अपने को देवता समझता है।

इरशाद अहमद—पानीपत : क्या दौलत इंसान को देवता बना देती है ?

उ० : 'देव' बना देती है। इसके 'ता' बहुत कम ही जुड़ पाता है।

हरगुन जसवानी—मन्डला : आदमी को अपनी बुराईयां कब महसूस होती हैं ?

उ० : आप बुरा न माने तो यह प्रश्न आप कांग्रेसी नेताओं से पूछें तो अच्छा होगा।

नामदेव रतनानी—दतिया : यह जानते हुए भी कि मौत एक दिन अवश्य आती है, मनुष्य मौत से इतना डरता क्यों है ?

उ० : मालिक मकान से डरना ही चाहिये जी। अपनी जेब बिल्कुल खाली रहती है और हम सोचते हैं किसी दिन मौत ने आकर कहा, इस जिस्म में रहने का किराया दो, तो हम कहाँ से देंगे ?

बजरंग शर्मा—श्री गंगा नगर : अंकल जी, आप कभी-कभी खफ़ा होकर हमसे जुदा क्यों हो जाते हैं ?

उ० : कौन कहता है कि हम तुम में जुदाई होगी,
ये हवाई किसी दुश्मन ने उड़ाई होगी।

एस० मन्जूर हसन 'कादरी'—बीकानेर : चचा जान, आप जिन्दगी में सब से अधिक कब हंसे थे ?

उ० : एक रोज जब हमारे आफिसर ने घड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा था, "तुम रोज लेट आते हो। देख रहे हो बुजी में क्या घड़ा है ?" और हमने उत्तर दिया था, "सर, हम लेट तो जरूर आते हैं पर जाते भी तो जल्दी से हैं।" "इस पर आफिसर ने संतुष्ट होकर कहा था, "अच्छा यह बात है ! चलो, फिर कोई बात नहीं।"

श्याम सुन्दर मेहरा—गीता कालोनी : गाय, भैंस, बकरी घास खाकर दूध देती है। आज के मनुष्य से तो यही अच्छे हैं ?

उ० : क्या वे घास खाकर आपके प्रश्नों के उत्तर भी दे सकते हैं।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

दीवाना
पंचतंत्र

अच्छा भई काकातुआ, मैं तुमसे विदा लेने आया हूं। अब अगले साल मिलेंगे।
तुम जा रहे हो?

तुम कोन सी टोली से जा रहे हो?

हां, वह देखो अब हमारी टोलियां साइबेरिया के लिए उड़ान भर रही हैं
मुझे तुम्हारी बहुत याद आयेगी।
मेरी तथा भारत के दूसरे पक्षियों की ओर से साइबेरिया के पक्षियों को शुभकामना संदेश देना। दोनों स्थानों के पक्षियों की मैत्री दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती रहे।

कहीं ऐसा न हो कि सब उड़ जायें और तुम रह जाओ।
हूंह, मैं इतना बेवकूफ नहीं हूं। हमेशा अपनी यात्रा का पूरा प्रबन्ध करके रखता हूं।

मैंने फ्लाइट नम्बर २०३ में सीट रिजर्व करा रखी है। वह देखो।
?

क्रोधी देवता

साभार-लक्ष्मण

गंगा के दक्षिणी तट पर एक प्रसिद्ध नगर था—रंगपुर। हर तरह से सम्पन्न और सुन्दर। व्यापार का केन्द्र था, अतः जीविका के कितने ही साधन थे ; इसलिए वहां के निवासियों को किसी तरह का अभाव नहीं था।

वहीं ब्राह्मण शंख भी रहता था—उदार और गुणी। क्रोध का नाम-निशान नहीं। भरा-पूरा परिवार। खाता-पीता घर। कोई दुःख नहीं। कोई चिन्ता नहीं।

लेकिन शंख को शान्ति नहीं मिलती थी। वह रात-दिन सोच में पड़ा रहता। उसकी समझ में नहीं आता था कि ऐसे ही जीवन बिता देने का क्या लाभ है। कभी सोचता, मैं बेकार ही इस माया-जाल में पड़ गया हूं। लोगों के मोह में फंसकर जिन्दगी बेकार ही गंवा रहा हूं। इससे अच्छा तो सबको छोड़-छाड़ कर किसी गुफा में चुपचाप पड़ा रहना है। न दुनिया के झमेले होंगे, न कोई सुख दुःख व्यापेगा।

उस दिन भी बैठा-बैठा वह ऐसी ही विरागभरी बातें सोच रहा था। सांझ घिर आई थी। आकाश में कुहासा छाया हुआ था, ठीक तभी एक व्यक्ति दरवाजे पर आ खड़ा हुआ।

शंख ने पूछा, "कौन है ?"

"मैं अतिथि हूं—ब्राह्मण। रात-भर के लिए आश्रय चाहिए।"

बस, दूसरे ही क्षण शंख का सारा हवा विराग हो गया। वह खिल उठा। मन में उमड़ती चिन्ताओं से छुटकारा मिल गया।

उसने हर्ष से उठकर अतिथि का स्वागत किया। उसे घर में लाकर आदरसहित आसन पर बिठाया और बड़ी लगन से सेवा-सत्कार में जुट गया।

भोजन आदि से निबट कर शंख अतिथि के पास ही आ बैठा। बड़ी देर तक दोनों में तरह-तरह की बातें होतीं रहीं।

अतिथि खूब ज्ञानी और अनुभवी था। वह अनेक यात्राएं कर चुका था। कितने ही तीर्थ घूम आया था। हर तरह के लोगों से मिल चुका था। हर मीठे स्वर में शंख को यात्रा के अनुभव और रोचक कहानियां सुनाता रहा।

कुछ ही देर में दोनों एकदम घनिष्ठ हो गए। शंख को लगा कि अपना दुःख इन अतिथि देवता से कहकर वह मन का बोझ हल्का कर सकता है। अनुभवी व्यक्ति हैं। शायद कोई राह बता दें।

एकाएक अतिथि ने ही पूछ लिया, "क्या बात है, मित्र, किस चिन्ता में पड़े हो ? मैं जितनी देर से यहां हूं और तुमने सद्गृहस्थ का धर्म निभाते हुए जिस प्रकार मेरा स्वागत सत्कार किया है, उससे मैं तो अपने अनुभवों के बल पर यही अनुमान लगा सकता हूं कि तुम खूब सम्पन्न हो। किसी तरह का अभाव नहीं है। लेकिन तुम बात करते-करते जिस तरह बार-बार रुक कर किसी सोच में डूब जाते हो, उससे लगता है कि तुम्हारा मन शान्त नहीं है। यदि अनुचित न हो तो बताओ, क्या कारण है ? मुझसे बन पड़े तो तुम्हारे दुःख में हाथ बंटाकर उपकार का बोझ कुछ हल्का करूं।"

शंख तो चाहता ही यही था। तुरन्त बोला, "आपका अनुमान सत्य है। मुझे शान्ति नहीं मिलती। मैं स्वयं ही आपसे कहना चाहता था। अब तो मैं आपके स्नेह-बन्धन में बंध गया हूं। आपने भी मुझे मित्र बना लिया, तब आपसे क्या छिपाना !"

ब्राह्मण ने उत्सुक होकर कहा, "बताओ तो सही, बात क्या है ?"

शंख कहने लगा, "जैसा कि आप देख रहे हैं, मेरे पास सब-कुछ है—धन-सम्पत्ति, पत्नी-पुत्र, सब-कुछ। कोई अभाव नहीं। लेकिन अब इन सुखों को भोगने में मेरी कोई रुचि नहीं है। मुझे लगता है कि ये झूठे बन्धन ही हमें बांधकर निश्चेष्ट कर देते हैं। हम सब के सिर पर यमराज का झण्डा लहरा रहा है एक दिन यम देवता का बुलावा आ जाएगा और तब पता चलेगा कि हमने तो कुछ किया ही नहीं। सारा जीवन व्यर्थ गंवा दिया।"

अतिथि ने कहा, "मृत्यु तो अटल है, लेकिन तुम्हारा सोचना भी ठीक है। यह जीवन गवा देने के लिए नहीं है। लेकिन तुम करना क्या चाहते हो ?"

"यही जानता होता तो मुझे शान्ति ही न मिल जाती। मेरा मन तो हमेशा भटकता रहता है। कभी सोचता हूं कि संन्यास ले लूं लेकिन जब देखता हूं कि संन्यासियों को दर-दर भटककर वस्त्र और अन्न जुटाने के लिए भिक्षा मांगनी पड़ती है तो मन उधर से उचाट हो जाता है। लगता है कि जैसा हूं वैसा ही बना रहूं।"

अतिथि ने कहा, "यदि तुम संसार के कल्याण के लिए कोई महान उद्देश्य लेकर संन्यास लेना चाहते हो तो बात अलग है। केवल सांसारिक सुख दुःख देखकर या यूं ही मन उचट जाने से संन्यास ले लेना जीवन में

भागना है। यह भगोड़ापन है और समर्थ होते हुए भी औरों के सिर पर बोझ बन जाना है। इससे तो अच्छा यही है कि तुम जैसे हो, वैसे ही रहो।"

शंख ने उदास होकर कहा, "यही तो मैं भी सोचता हूं, लेकिन यहां भी तो शान्ति नहीं। तरह-तरह की कामनाएं मन में जन्म लेती हैं। जैसे भी बने, धन-संग्रह करना पड़ता है। फिर मैं कितने उदाहरण देख चुका हूं। बड़े-बड़े ज्ञानी और सज्जन भी इस विषय-वासना के जाल में उलझकर घोर यातना भुगतते हैं, तब भला मेरी क्या गिनती? मेरी तो इस जंजाल में बड़ी दुर्गति होगी।"

अतिथि ने कहा, "जो भी सदाचार भूलकर माया के फन्दे में पड़ जाता है, वह तो दुःख भुगतेगा ही। ऐसे लोगों से तो पद्म-नाभ नाग ही भला है, जो संसार के सारे काम करता है। सारे कर्तव्य निभाता है। परिवार के साथ रहता है, फिर भी सुखी है।"

"यह नाग कौन है?"

अतिथि को जैसे कुछ याद आ गया। बोला, "ठीक तो है। तुम यहां रहते-रहते उकता गए हो, इसीलिए तुम्हारा मन और उद्विग्न हो जाता होगा। बुद्धि चंचल हो रही हैं। ऐसा करो, कुछ दिन के लिए तुम पर्यटन पर चले जाओ। यात्रा में तुम्हें तरह-तरह के अनुभव होंगे; साथ ही तुम स्वयं जाकर नागराज के दर्शन कर आना। वह प्रसन्न हुए तो तुम्हें सदाचार धर्म का रहस्य भी बताएंगे। जिससे तुम्हें शान्ति मिलेगी।"

शंख को अतिथि का विचार अच्छा लगा, "कहां रहते हैं वह?"

"नैमिषारण्य क्षेत्र में, गोमती नदी के तट पर नागों की एक प्रसिद्ध बस्ती है। उसका नाम ही है नागपुर। तुम स्वयं जाकर देख आओ कि पद्मनाग क्या करते हैं, कैसे रहते हैं। मुझे विश्वास है, वहां तुम्हें शान्ति का रहस्य अवश्य मिलेगा।"

शंख बड़ा प्रसन्न हुआ। अन्धे को जैसे आंख मिल गई हो।

वह रात-भर अतिथि के साथ ही ज्ञान-चर्चा करता रहा।

सवेरे अतिथि को विदा करके वह भी यात्रा की तैयारी करने लगा।

कितने ही वन-पर्वत लांघता, तीर्थ और नगर देखता, नदियों और घाटियों को पार करता हुआ शंख एक दिन पद्मनाग के दर-वाजे पर जा खड़ा हुआ। पुकारा, "कोई है? मैं अतिथि द्वार पर खड़ा हूं।"

सुनते ही नाग की सुन्दर पत्नी बाहर निकल आई। मीठे स्वर में बोली, "मेरे पति तो इस समय नहीं हैं। आज्ञा दीजिए, क्या सेवा करूं?"

शंख ने कहा, "आपने मधुर वाणी से मेरा स्वागत किया, इसी से मेरी सारी थकान दूर हो गई। मैं वास्तव में बहुत दूर से आपके पति श्री पद्मनाभ नाग का ही दर्शन करने आया हूं। ब्राह्मण हूं। उनका दर्शन हो, यही मेरा मनोरथ है।"

नागपत्नी ने कहा, "इसमें तो देर लगेगी। मेरे पति तो इन दिनों सूर्य देवता का विमान ढोने के लिए गए हैं। वर्ष-भर में

एक महीने के लिए उन्हें यह काम करना पड़ता है। पन्द्रह दिन बीत चुके हैं, अभी पन्द्रह दिन शेष हैं।"

शंख को निराशा-सी हुई।

नागपत्नी ने भांपकर कहा, "उनके विदेश जाने के कारण आप दुखी न हों। उनके दर्शन के अतिरिक्त और जो भी काम हो मुझे बताइए। मैं उनकी पत्नी हूं, उनके धर्म का निबाह करूंगी। आप निराश नहीं होंगे। आज्ञा दीजिए।"

शंख बड़ा प्रभावित हुआ। वह समझ गया कि पद्मनाग सचमुच बड़ा सुखी होगा। उसके न होने पर भी उसके धर्म की रक्षा करने वाले हैं और तत्पर होकर धर्म का पालन करते हैं।

वह बड़े आदर के साथ बोला, "आपका दर्शन भी मुझे भाग्य से ही हो गया। किन्तु नागराज का दर्शन किए बिना मैं लौटूंगा नहीं। आप उन्हें बता दीजिए, मैं गोमती नदी के तट पर सीमित आहार करके उनकी प्रतीक्षा करता बैठा हूं।"

गोमती नदी के तट पर रुककर ब्राह्मण शंख पद्मनाग की प्रतीक्षा करने लगा।

नागपत्नी जितनी सुन्दर थी, उतनी ही शिष्ट और कर्तव्यपरायण भी। वह किसी का दुःख नहीं देख सकती थी। अपने पति की भांति ही वह बड़ी उदार थी।

ब्राह्मण के जाने के बाद वह दिन-भर सोचती रही। हर पल उसी की चिन्ता में लीन। वह जानती थी कि मनुष्यों में ब्राह्मण लोगों का बड़ा प्रभाव है। पठन-पाठन तथा ज्ञान और धर्मचर्या में ही उनका जीवन बीतता है। कभी कोई अभाव व्यापे तो वह राजा से, समाज के धनी लोगों से या किसी भी समर्थ व्यक्ति से दान की याचना करते हैं। हो न हो, यह ब्राह्मण भी मेरे यशस्वी पति से कुछ मांगने ही आया था!

और भी बहुत-सी बातें मन में आईं। ब्राह्मण तीर्थ यात्रा पर निकला है। सम्भवतः उसके पास रास्ते के लिए धन न बचा हो। उसने संकोचवश मुझसे कुछ नहीं कहा। सोचा होगा कि यह स्त्री ठहरी; मेरा दुःख नहीं समझेगी। यों ही टरका देगी। इसी-लिए मुझसे उसने अपनी आवश्यकता नहीं बताई।

यह बात नागपत्नी के मन को सालती रही। ब्राह्मण ने उस में ऐसे कौन-से लक्षण देखे कि उसे कंजूस और नीच समझकर बिना कुछ मांगे चला गया?

नागपत्नी जानती थी कि उसके पति को इस घटना से बड़ा दुःख होगा। वह स्वभाव से बड़े क्रोधी भी हैं। अतिथियों के सम्बन्ध में कोई त्रुटि देखते ही उनके रोम-रोम से लपटें उठने लगती हैं। उस समय पता नहीं क्या कर डालें। बिना किसी दोष के मुझे अथवा ब्राह्मण को ही हानि पहुंचा सकते हैं। अतः जैसे भी बने, इस ब्राह्मण को संतुष्ट करना पड़ेगा।

सांझ होते ही नागपत्नी ने अपने भाई को दूत बनाकर भेजा। वह गोमती तट पर जाकर ब्राह्मण शंख से मिला।

उसे नागपत्नी ने भेजा है, यह जानकर शंख बड़ा ही प्रसन्न हुआ। उसने तुरन्त दूत को आसन देकर उसका सत्कार किया और थोड़े से फल रखकर बोला, "लीजिए ग्रहण कीजिए। मैंने बड़ी लगन से वन में मीठे फलों को खोज-खोजकर जुटाया है। मैंने सोचा है, यही फलाहार करके नागराज की प्रतीक्षा में पन्द्रह दिन काट दूंगा।"

दूत बोला "धन्यवाद। किन्तु आप

(शेष पृष्ठ ३० पर)

फिल्में
दीवाना संदर्भ
में
रामभरोसे
बंडल बाज़
सम्पूर्ण क्रांति
जे.पी.
आज का
महात्मा
कागज़ की नाव
चुनाव मैनीफैस्टो
महंगासंस ज्यूलर्स
अब
क्या
होगा?
कहानी
किस्मत
की
कूड़ा

जिंदगी और मौत
परीक्षा फल
आखिरी गोली
साहित्य समीक्षा
ANACIN
चोर मचाये शोर
वोट दो मांगेलाल
कौन अपना कौन पराया
बिजली बंद
ज़िद
ग्रैंड साड़ी
प्रतिज्ञा
हम आज से स्म-
गलिंग का धंधा
नहीं करेंगे जस-
लोक हस्पताल में
हम यह शपथ
लेते हैं।

फिर बिजली चली गई।
सुबह हखबार में लिख्या था कि दो घंटे के लिये जायेगी बिजली। ग्राज गाम से चाचा रामदुलारे ग्राने वाला है वह क्या सोचेगा? म्हारे पास मोमबत्ती भी नहीं है।
मैं बाजार से जाकर मोमबत्ती ली ग्राता हूं। थम चाचा जी को ग्रगवानी करना।

यह कौन ग्रा रिया है?
चाचा राम दुलारे होगा। उसके ग्राने का भी तो यही टैम था। बिचारा हधेरे में धक्के खाता हुग्रा ग्राया होगा।
पायलागूं चाचा जी!
पायलागूं चाचा जी!
बड़े भाग म्हारे जो थम म्हारी झोंपड़ी पवित्र करने खुद ही ग्रा गिये।
चाचा, रास्ते मां तकलीफ तो नहीं हुई? ग्रन्दर पधारो।

चाचा, थम लोग गाम से सौ बरस मां एक ग्राध दार ही ग्राते हो। जान्नो म्हारे को तो ऐसा लागे जैसे साक्षात भगवान जी ग्रा गिये हों।
होर घर मे सब कुशल से?

चाचा थम कुछ बोलहो नहो रिये हो।
बेवकूफ चाचा जी इतनी दूर से थक कर ग्रा रहे हैं। दम फूल रिया होगा। तूने शर्बत को बात भी नहीं पूछी।
इवी रुह हाफजा शर्वत ली ग्राता हूं। हमदर्द दवाखाने का हिमालय की जड़ी-बूटियों से वनाया गया शर्वत।

राम प्यारी चाची के के हाल से? पिछले मास झगड़ू का लमडा इन्टरव्यू देने यहां आया था। म्हारे से भी मिला, वह बोल्ला था कि चाची को म्यादी बुखार रहता है। हमने संदेशा भेजा था कि चाचा को कहना वह चाची को लेकर यहां आवें। मेडीकल इन्स्टीच्यूट मां इलाज करा लेंगे।

इव तो ठीक हो गई होगी। हौर चाचा नियाने लोग कैश्शे हैं? सुना है कि म्हारे खेतों मां इस वरस ओले के मारे फसल का सत्यानाश हो गया है।
चाचा थम बोत थक गिये हो। इब तक थमारी जुबान से एक बात भी नहीं फूटी. क्या म्हारे से कोई भूल चूक हो गई से?
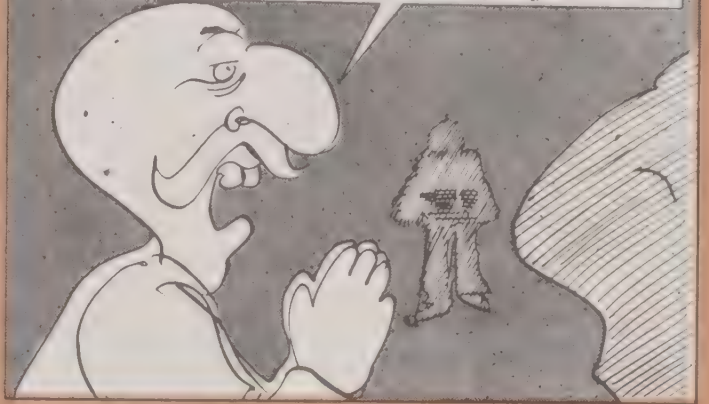
क्यों बड़-बड़ करके चाचा जी के कान खा रिया है? ज़रा इनको दम लेने दे। रेलवा टेस्सन से पैदल ही आ रिये हैं। थक कर चूर-चूर हो रहे होंगे। मौसम देख कितनी गर्मी का है? बिजली न होने से पंखा भी बंद है, एक तो सफर की थकावट दूसरे गर्मी के मारे चाचा जी का क्या हाल हो रिया होगा? उस पर तेरी चें चें।
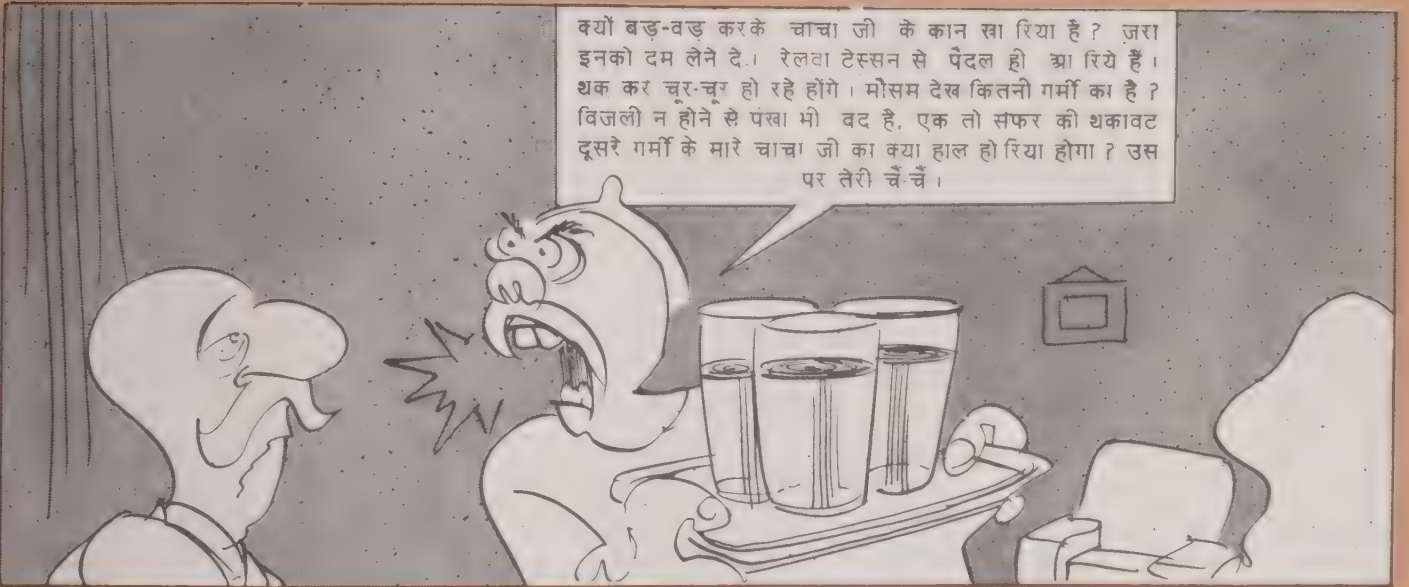
चाचा जी थम आराम से बैठो, इसकी बातों का ध्यान न करना। यह तो महामूर्ख आदमी है। लो थम ठंडा-ठंडा शर्बत पीकर जीवन सफल बनाओ।

चाचा हम तो सहर मां आकर फंस गिये। म्हारा दिल पिंजरे में कैद पंछी की तरियों तड़फता रहता है। यहां तो खाने-पीने की, रहने-सहने की सब चीजों की तंगी है। रोज हम गाम की खुली हवा ताजी, शाक-भाजी की याद करते हैं।
लेकिन मजबूरी है चाचा हम गाम नहीं आ सकते।
सब लोग कहते हैं थम गाम गिये तो हिन्दुस्तान का क्या होगा?

पहले इंदिरा नेहरु गांधी जी थीं। इब मोरारजी रणछोड जी भाई जी देसाई जी हैं। रोज म्हारे पास सलाह मशवरा करने आते हैं कि देश में यह समस्या से इसका क्या हल होना चाहिए। हम तो देश की सेवा करना अपना फरज मानते हैं।

अरे तेरी आंखां फूट गयी हैं? तने चाचा जी का शर्बत वाला गिलास गिरा दिया। बेचारे ने घूंट भी नहीं पिया था। फिटे मुँह हो तेरा!

मैं इबी ताजमहल चाय बना कर लाता हूँ। लगता है चाचा जी को शर्बत पसंद नहीं है।

ल्या इधर ल्या चाय का कप, मैं देता हूं चाचा जी को! तेरे हाथ बिल्कुल टट्टल जैसे हैं। तू चाचा जी के कपड़ों पर चाय गिरा देगा।
यह भाई कितनी धौंसबाजी करता है मेरे साथ?

हे भगवान, अच्छा हुआ मैंने चाय ले ली तुझसे। यह क्या चाय बनाई है तूने? इसमें से गंध कैसी आ रही है? मेरे यार तूने लगता है चाय के बदले पानी मे तम्बाकू डाल दिया है।
तम्बाकू
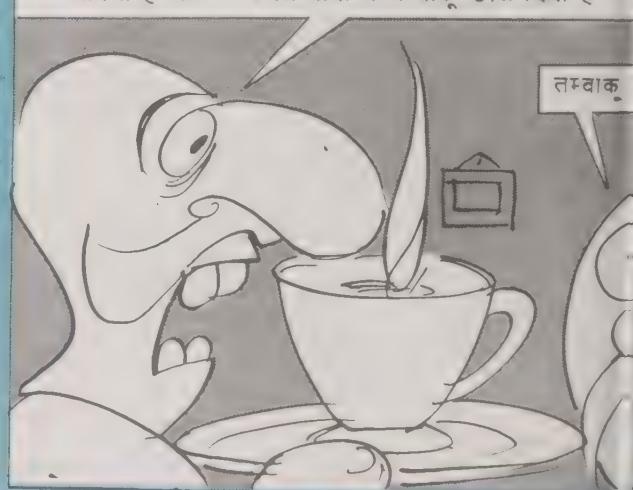
BING!
तू इसी का हकदार है।
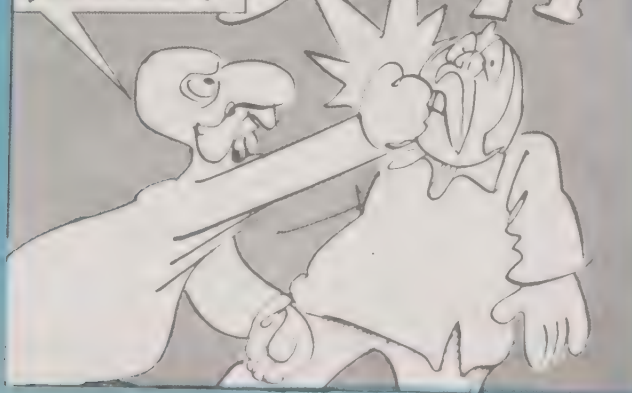
मैं खुद ही चाय बना कर लाता हूं चाचा जी के लिये। इस अनाड़ी के भरोसे तो कोई काम छोड़ा नहीं जा सकता है। सोने में भी हाथ डालेगा तो मिट्टी कर देगा।

चाचा जी, मां थारे लयीं बढ़िया फशकिलास लिपटन की चाय बना कर ली आ गिया हूँ।
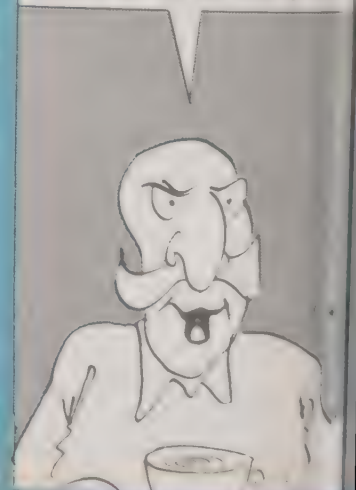
रस्ते मे लम्बे पड़े सिलबिल की चलती-फिरती लाश से पिलपिल ठोकर खा जाता है।
ठोकर
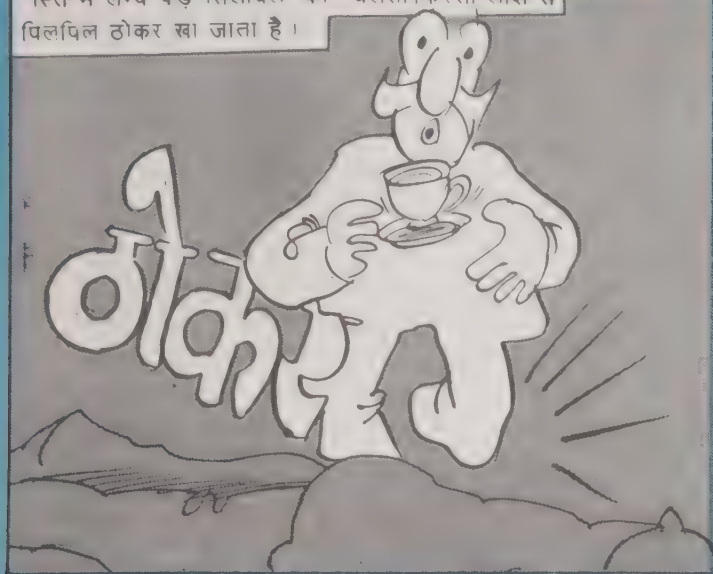
और हाथ से कप प्लेट छिटक कर चाचा जी पर गर्म-गर्म चाय गिरती है।
यह सिलबिल बेहोश भी पड़ा हो तो गड़बड़ कर जाता है।
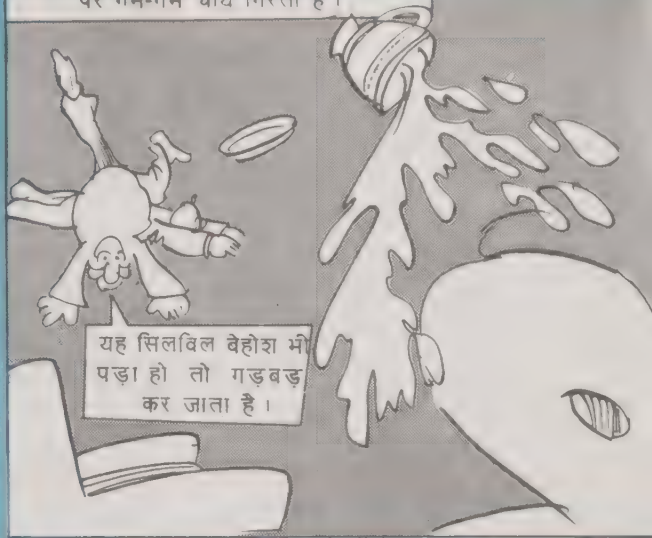
और चाचा जी दर्द से चीखते हुये भाग खड़े होते हैं।
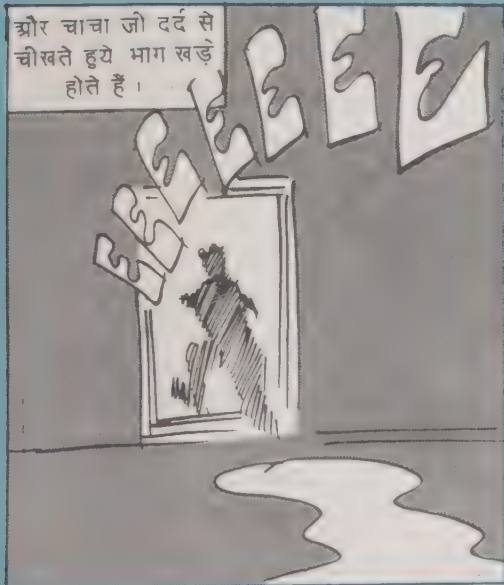
चाचा जी, वापिस आइये, हम आपके पैर पकड़ कर गलतियों की माफी मांग लेंगे। चाचा जी, चाचा जी ऐसा गजब मत कीजिए। चाचा राम दुलारे।

नमक हराम चूहे, तूने मोमबत्ती लाने में दो घंटे लगा दिये। तेरी वजह से चाचा जी गुस्से होकर चले गये। अब सारे गांव में हमारी बदनामी होगी। हंधेरे में चाचा जी के साथ बोत गड़बड़ हुआ। तू है इस सबका जिम्मेवार।
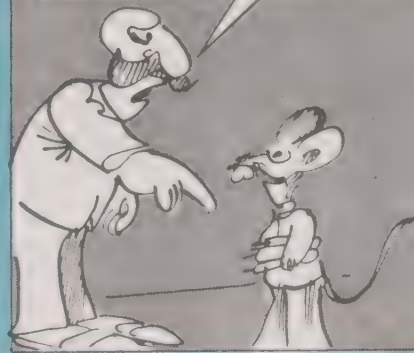
यह है थारा चाचा? चिड़िया घर से भागा हुआ कंगारु! अरे अक्ल के दुश्मनों जिसे थम चाचा समझ रिये थे वह चिड़िया घर से फरार एक कंगारु था। मैंने अभी-अभी इसको थारे कमरे से भाग कर निकलते देखा है। यह देखो चिड़िया घर वाले इसे अपनी वैन में पकड़ कर ले जा रहे हैं। अंधेरे में थमको यह भी पता नहीं लगा।
जभी मैं सोचूं कि हम इतना बोल रिये हैं चाचा जवाब क्यों नहो दे रिया।
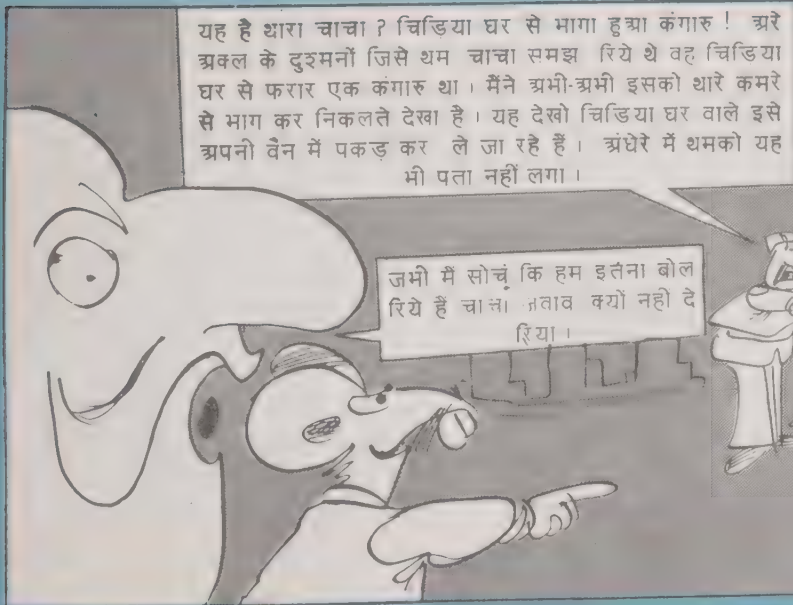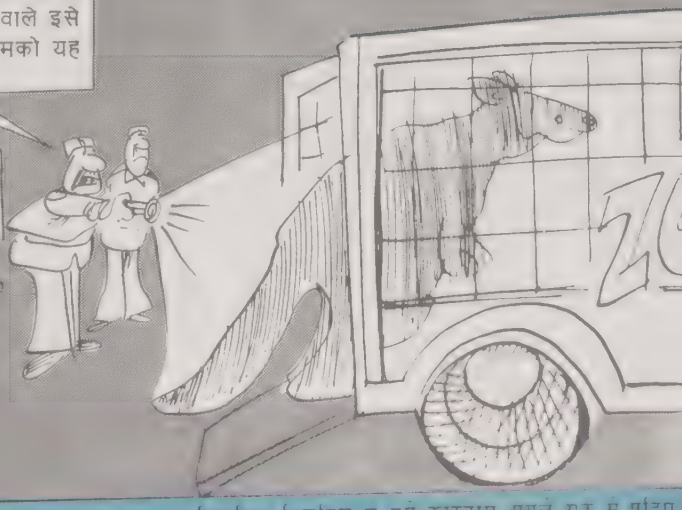
आपका दीवाना अंक २० प्राप्त किया। हिलस्टेशन का मुखपृष्ठ पसन्द आया। आपके नये सुझाव मंत्रालय देने का 'धन्यवाद'। कुछ अन्य सुझाव भी बहुत अच्छे लगे। सिलबिल पिलपिल, चिल्ली लीला, मकड़ी का जाला कहानी, मदहोश, अर्थ-अनर्थ तथा दीवानी चिपकी से प्रसन्नता मिली। कृपया अब रग भरो प्रतियोगिता की जगह कोई नई प्रतियोगिता शुरू करें।

सतीश गुलाठी 'गीत'—सोनीपत

आपका दीवाना अंक नं० २० पढ़ा! मैंने जिन्दगी में पहली बार तो नहीं, पर हाँ पूर्ण पत्रिका पहली बार ही पढ़ी है! वास्तव में यह हास्य तथा मनोरंजन के लिए अच्छी पत्रिका है! इस में मुझे चेलाराम चिल्ली तथा पिलपिल-सिलबिल अत्यन्त पसन्द आये। इसके लिए मेरा सस्नेह धन्यवाद!

टाक नारायण लाल—बीकानेर

दीवाना अंक १६ पढ़ा, काफी हास्यप्रद था। प्रगति के मार्ग में दीवाना अन्य सब पत्रिकाओं से आगे है। कृपया इन्स्पेक्टर ईगल और फैण्टम को दीवाना में ज्यादा स्थान दें। प्रतियोगिताओं को अधिक स्थान दें। पैरोडी के स्थान पर हास्य कहानियां छापा करें। मैं आशा करता हूं कि आप इन सब बातों पर ध्यान देंगे, तब दीवाना में नया निखार आ जायेगा।

शंकर लाल हबलानी—ग्वालियर

दीवाना का मुख पृष्ठ जितना धांसू होता है उतनी धाँमू सामग्री नहीं मिलती (चार स्तम्भों को छोड़कर)। यदि मुझ से कोई अपनी पसन्द के स्तम्भों को क्रम से रखने को कहे तो मैं फैण्टम को सबसे पहले, दीवाना पचतन्त्र, चिल्ली लीला और फिर सिलबिल-पिलपिल को रखूँगा।

चाचा चौधरी को हटाकर आपने एक महान काम किया है उन्हें कृपया छुट्टी पर ही रहने दें।

'एक बार में सात मारे' जैसी रद्दी कहानियों से तो आप 'यन्त्र मानवयुग' ही लाख दर्जे अच्छा देते थे। कृपया यन्त्र मानवयुग फिर स्थायी रूप से प्रारम्भ करें। यदि आपको ऐसी कहानियां देना ही है तो छोटी-छोटी तीन-चार दिया करें।

एस. यू. रहमान तथा जे. यू. रहमान—लखनऊ

अंक १६ का मुख पृष्ठ देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। परन्तु इसमें कोई ऐसी चीज पढ़ने में नहीं आयी जिसे पढ़कर हंसी आती। आपने सभी पुराने स्तम्भों (जैसे-सिलबिल पिलपिल, प्रेम-पत्र आदि) को दीवाना के नये रूप में स्थायी रूप से 'यथास्थान' रखा, तो फैण्टम जैसे पुराने और सबसे अच्छे स्तम्भ को उसका पूर्ण स्थान (मतलब दो पेज में) क्यों नहीं मिलता? रंग भरो प्रतियोगिता क्यों बन्द कर दी? कृपया उत्तर दीजिये। 'क्यों और कैसे' में मैंने दो रोचक प्रश्न भेजे। उनका उत्तर क्यों नहीं मिला?

एस० यू० रहमान—लखनऊ

हम पहले भी बता चुके हैं कि रंग-भरो प्रतियोगिता अथवा कोई भी अन्य प्रतियोगिता स्थाई रूप से बन्द नहीं की जाती। अंक २० में ही रंग भरो प्रतियोगिता प्रकाशित की गई है। क्यों और कैसे में आपके सवाल भी नम्बर आने पर अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे। —सं०

दीवाना का छुट्टी अंक छुट्टी के ऐसे मौके पर फड़फड़ाता हुआ आ गिरा, जबकि मेरा दिल उसका बेसब्री से इन्तजार कर रहा था।

छुट्टी अंक में प्रकाशित सारी सामग्रियां बहुत ही दिल को मजेदार, शानदार लगीं। 'दीवाना हिल स्टेशन गाइड,' मोटू अतलू की फिल्म 'चाचा की भुजिया' दिल को हिट कर रही है। नये मंत्रालय के लिए दीवाना के दीवाने सुझाव बहुत पसन्द आये। मेरा एक सुझाव है, एक अनुरोध है कि इस दीवाना पत्रिका को और अधिक दीवानी बनाने के लिये 'फिल्म पैरोडी' आरम्भ कर दीजिये। फिर देखिये चमत्कार। पत्रिका में चार चांद लग जायेंगे।

संजय किशोर श्रीवास्तव—ग्वालियर

'दीवाना' का छुट्टी अंक नए अन्दाज में पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। 'नए मंत्रालय' के लिए आपका दीवाना-सुझाव बहुत पसन्द आया।

'दीवाना' में आप फिल्म-कलाकार पर जो इटरव्यू छापते हैं इसे बन्द कर दें। क्योंकि आप एक ही कलाकार पर बार-बार इन्टरव्यू छाप देते हैं जो हम दीवानों के लिए कोफ्त की बात है।

पिल-पहेली और गुमनाम है कोई प्रतियोगिता नं० ८ के परिणाम घोषित करते समय लगता है पूरा 'दीवाना-स्टाफ' सो रहा था। क्योंकि इन प्रतियोगिताओं के घोषित परिणाम सन्तोषपूर्ण नहीं हैं। कृपया भविष्य में प्रतियोगिताओं के परिणाम न्यायपूर्ण ढंग से घोषित करें। अगले अंक की प्रतीक्षा में—

सनम—नई दिल्ली

दीवाना का १६वां अंक मिला। मुखपृष्ठ पर मोटू, चिल्ली तथा सिलबिल को देखकर काफी हंसी आई। सुबह जब स्कूल जाने लगा तो बुकस्टाल पर 'दीवाना' देखकर वहीं पर रुक गया और उसे एकटक निहारने लगा स्कूल जब पहुंचा तब मास्टर जी से डांट भी खानी पड़ी। मैं दीवाना का डेढ़ साल से दीवाना हूं। अंक १६ में 'एक बार में सात मारे', बन्द करो बकवास, फिल्मों में राजनीति की घुसपैठ, इन्स्पेक्टर ईगल रुचिकर लगे। गुमनाम है कोई प्रतियोगिता भी काफी मनोरंजक है। कृपया आप चिल्ली के दो दाँत हमें पार्सल कर दीजिए।

मनोज भगत 'गब्बर'—आरा

दीवाना का अंक २० मिला, इस अंक के मुख पृष्ठ का झरोखा देखा तो हंसी आ गई लेकिन मुख पृष्ठ पलटा तो नजारा ही कुछ और था। वाकई दीवाना का हर अंक पिछले अंक से दो कदम आगे होता है तो मुख पृष्ठ चार कदम! दीवाना के इस अंक में मोटू-पतलू असली चित्रकथा विशेष रोचक लगी। 'परोपकारी', 'चिल्ली लीला' 'प्रेम-पत्र' व 'नये मंत्रालय' के सभी चित्रों के दीवाने वाक्यों ने हंसा-हंसाकर दीवाना के दीवानों को दीवाना बना दिया। अब दीवाना के नए अंक के इन्तजार के लिए एक सप्ताह भी एक माह के बराबर लगता है! कृपया 'गुमनाम है कोई प्रतियोगिता' जैसी कोई प्रतियोगिता शुरू करें तो मजा आ जाये!

एस० मन्जूर हसन 'कादरी'—बीकानेर

अब यह सुन लीजिये जाको मारे साईया बचा सके न कोए। आप यह नहीं मानते तो चलिये हमारे साथ यमराज के दरबार में। और अपनी आँखों से देखिये वहां क्या हो रहा है।

मुझे सूचना मिली है, कि हमारे जानलेवा विभाग में भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हमारे अधिकारी अपने काम की ओर से लापरवाह हैं। धरती पर ऐसे कितने ही लोग हैं जिनके जीवन के दिन समाप्त हो चुके हैं। पर वह ग्लूकोज़ की बोतलें चढ़ा-चढ़ाकर जीये जा रहे हैं, न वे मरने का नाम लेते हैं और न हमारे अधिकारी उनके प्राण हर्ण करते हैं। फाइलें खोलकर देखो आज किस-किस के जीवन का दिया गुल होने वाला है।

यह है एक आदमी, जिसका दाना पानी समाप्त होने वाला है।

यह लिखा है, एक और आदमी का नाम। जो किसी भी दल का नहीं है, पर लोगों के सीने पर मूंग दलेजा रहा है।

पहले यमराज लोगों के प्राण लेने स्वग्र जाया करते थे । ग्रब छोटे ग्रधिकारियों को भेज देते है ।
मंत्रियों के बजाए उनके सेक्रेटरी ही काम करते हैं ग्राजकल मंत्री ग्रंगुठा छाप होते हैं । हमारे यमराज तो नारायण की कृपा मे बड़े विद्वान है ।
मेरा विचार है हम सही जगह पर पहुंच गये हैं ।
वह देखो, उस बोर्ड पर क्या लिखा है ?
हमारी जान लेवा फाईल में तो मोटूराम लिखा था ।
सेठ नाटूराम
मराठे वाला बंगला
चन्द्रचकोर दिल्ली
नाटूराम लिखा होगा, मुझे पता है तू कितना पढ़ा लिखा है ।
वहा लिखा था, पराठे वाली गली !
मराठे वाली बगला लिखा होगा । यह मराठे वाला बगला ही तो है ।
चान्दनी चौक दिल्ली लिखा था, मुझे तो इतना याद है ।
चन्द्र चकोर नहीं लिखा था ? तू कसम खाले ।
मैं कहता हूं, हम ठीक स्थान पर पहुंच गये है । ग्रब तुझे धक्के ही खाने हैं तो तेरी मरज़ी ।
लगता है तू ही ठीक कह रहा है । चलो, सेठ नाटू के प्राण हर लो ।
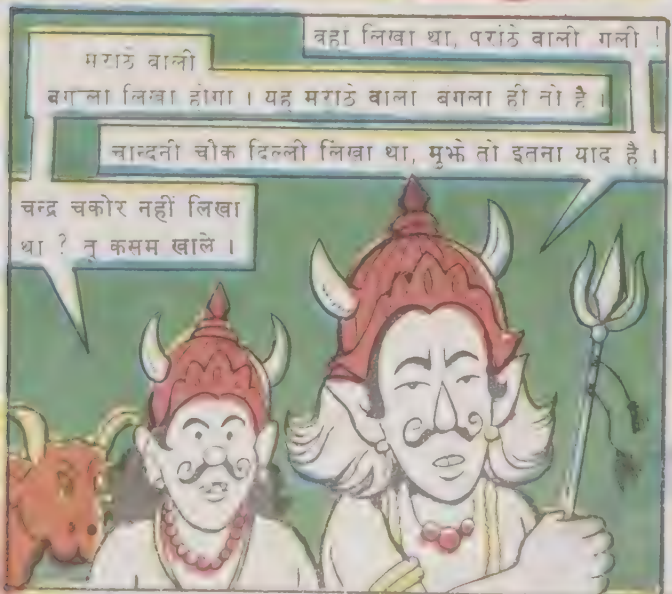
यमराज के दूत मोटू के प्राण लेने की बजाए भूल से जिस स्थान पर पहुंचे थे वह प्रसिद्ध उद्योगपति सेठ नाटूराम का बंगला था। वहां सेठ जी ने इस समय नई नीतियों पर विचार करने के लिए अपनी सब फैक्ट्रियों के मैनेजरों की मीटिंग बुलाई हुई थी।
आज हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि फैक्ट्रियों में उत्पादन बढ़ाया जाए। और यह काम मालिकों और मज़दूरों के सहयोग से ही हो सकता है।

इसके लिये मेरे सामने जो योजना रखी गई है उसके अनुसार हमारी फैक्ट्रियों को पन्द्रह लाख रुपया सालाना अधिक खर्च करना होगा। इसके मुक़ाबले में बढ़े हुए उत्पादन की जो क्षमता दी गई है वह बहुत कम है। उससे यह नया घाटा पूरा नहीं होता।
इसकी जान लेकर इसका सारा घाटा पूरा कर दो।
ज़रा सोचिये, क्या हम यह नया बोझ उठाने के क़ाबिल हैं?

हम तुम्हें धरती से उठाने के क़ाबिल तो हैं।
मैं...मैं...मैं...मैं!
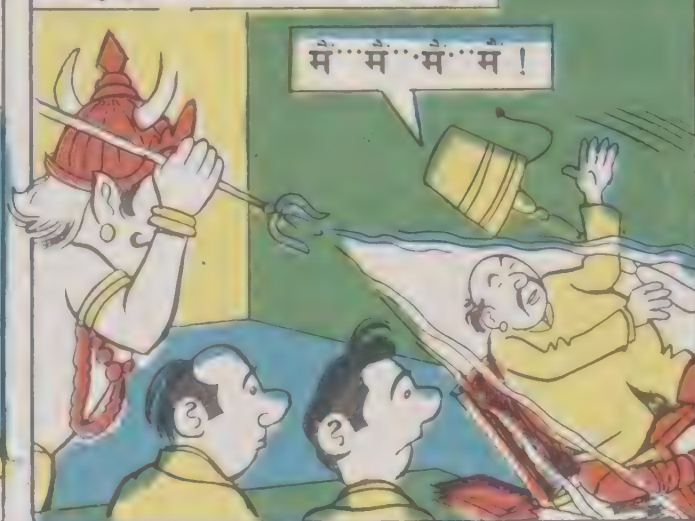
जैसे ही यमराज के दूत ने सेठ नाटूराम के प्राण निकाले वैसे ही उनका बेजान शरीर कुर्सी से लुढ़क कर नीचे आ गिरा।
धड़ाम

क्या हुआ, क्या हुआ?
शायद हार्ट अटैक का दौरा पड़ा है। जल्दी से डाक्टर को बुलाओ।

फिर भी पैसा, पैसा ही करते रहते थे हर समय। क्या ले गये इस दुनिया से ?

पर जीवन ने साथ नही दिया। कैसे पलक झपकते ही सारी कहानी समाप्त हो गई।

नाटूराम की आत्मा हाज़िर है महाराज।
इतनी देर लगा दी। क्या लीडरों की सरफुटव्वल देखने लगे थे ?
बिना कारण बताये मुझे यहां दबोच लाये हो। क्या यहां भी कोई मीसा का कानून लगा हुआ है ?

तुम्हारे जीवन के दिन समाप्त हुए, क्या यह कारण काफी नहीं है मोटूराम।
मेरा नाम मोटू नहीं है नाटू है।
ठहरिये हजूर। मुझे कुछ गड़बड़ दिखाई दे रही है।

हमने तुम्हें इस पते पर भेजा था :
मोटूराम परांठे वाली गली चान्दनी चौक दिल्ली
तुम किस पते पर गये थे ?

ठहरो याद कर रहा हूं
नाटूराम मराठे वाली बंगली, चन्द्रचकोर दिल्ली।

मोटूराम की बजाए नाटूराम, परांठे वाली गली की बजाए, मराठे वाली बंगली और चान्दनी चौक की बजाए चन्द्रचकोर
अनर्थ हो गया महाराज, यह गलत जगह पहुंच कर गलत आदमी की आत्मा ले आए हैं।

इतनी बड़ी भूल ! मैं पहले हीं कह रहा था यमपुरी में भ्रष्टाचार फैलता जा रहा है। महंगाई भत्ता, प्राविडेंटफंड, ओवर टाईम, सब चाहिये, बस काम नहीं चाहिये।

जाओ ! जाकर असली मोटू को लाओ नहीं तो तुम्हें फांसी पर चढ़ा दूंगा।
और मेरे साथ जो ज्यादती हुई है उसके लिये मैं तुम पर मुकदमा कर दूंगा। मैं तुम पर आयोग बिठवाऊंगा। मैं तुम्हारे काग़ज़ात सील करवा दूंगा। मैं तुम्हारी ज़्यादतियों की जांज करवाऊंगा।

मैं पैसे वाला हूं, सामने वाले को मैं मच्छर की तरह मसल देता हूं, मैंने तुमसे इस अपमान का बदला न लिया तो मेरा नाम भी सेठ नाटूराम नहीं ।

धीरज से काम लीजिये सेठ जी । आप के साथ पूरा इन्साफ़ किया जाएगा ।

सेठ जी का खाता खोल कर देखो, इनके जीवन के कितने दिन बाकी हैं ?
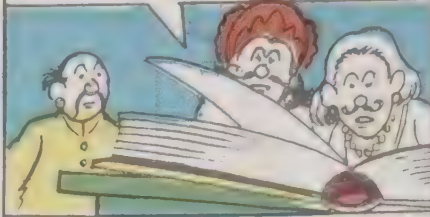
गुस्सा थूक दीजिये सेठ जी । और थोड़ी देर हमारे रेस्ट हाऊस में आराम कीजिये ।

उधर यमराज के दूत अब तक मोटू के घर पहुंच चुके थे ।
हां, यही है मोटू का मकान ।

मैं तो एक बात जानता हूं । आदमी सादा खाये, सादा पहने, समय पर सोये और समय पर जागे तो सौ साल से भी अधिक उम्र पा सकता है ।

यकीन न आए तो मैं तुम्हें इसी प्रकार सौ साल तक जी कर दिखा दूंगा ।
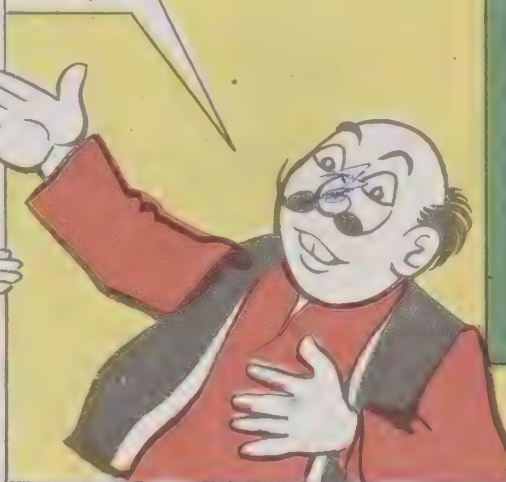
अरे क्या हुआ मोटू को ?
हार्ट अटेक का दौरा पड़ा है क्या ?

क्या बात है ? कोई घबराने की बात तो नहीं ?
घबराओ या न घबराओ, यह बेचारा तो छुट्टी पा गया इस झंझट से ।
He is dead. मर गया ?
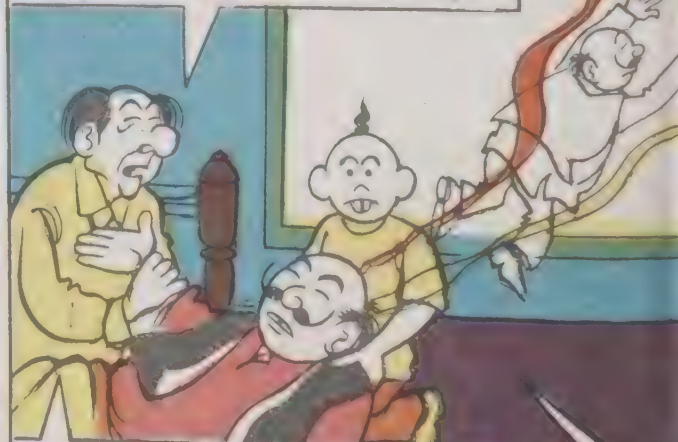
यह क्या मर गया, हम सब मर गये हैं।
हाय रे मोटू। मुझे भी अपने साथ क्यों न ले गया।
कोई पत्थर की नजर खा गई तुझे।

मेरी तो कोई आँख पत्थर की नहीं है। यह मुझे तो नहीं कोस रहे हैं।
किसी मनहूस का साया पड़ गया क्या तुझ पर।
मेरा साया तो कहीं और पड़ रहा है।

दूसरी ओर यमराज के दूत मोटू की आत्मा को लेकर तेजी से यमपुरी की ओर उड़े जा रहे थे।
मुझे कहां ले जा रहे हो भाई ?
यमराज के पास। तुम्हारे जीवन के दिन पूरे हुए।

मोटू हाजिर है महाराज !
मुझे यहाँ क्यों लाया गया है महाराज ?
हाँ, इस बार तुम ठीक आदमी को पकड़ कर लाए हो।

हमारी "जान लेवा फाईलों" से पता चलता है कि तुम्हारे जीवन के दिन समाप्त हुए।
क्या मुकदमे की सुनवाई के बिना ही यहाँ की अदालत में फैसला हो जाता है। क्या तुमने मुझे छोटा-मोटा नेता समझा है ?
तुम्हारे मुकदमे की पूरी सुनवाई होगी अदालत के बाहर जाकर अपने लिये कोई अच्छा सा वकील ढूंढ लो।

जाओ, अब सेठ नाटूराम की आत्मा को वापस लेजा कर उसके जिसम में डाल दो।
यहां तो एक और समस्या खड़ी हो गई है महाराज।

सेठ नाटू राम के मिलने-जुलने वालों ने उनके शवका दाह संस्कार कर दिया है। शमशान घाट पर उनके मृतक शरीर की अर्थी जलाई जा चुकी है।
शरीर को जला दिया ? यह तो घोर अनर्थ हो गया।

अब हम सेठ नाटूराम की आत्मा को उनके शरीर में कैसे वापस भेजेंगे, और हम उनकी आत्मा को अधिक देर अपने पास रख भी नहीं सकते।
धरती पर तो ऐसी समस्याओं का समाधान राजनीतिक लीडर कर लेते हैं। यहाँ मुझे एक उपाय सूझा है !

जैसे ही सेठ नाटू की आत्मा ने मोटू के मृतक शरीर में प्रवेश किया वैसे ही उसमें सांस आ गई और शव पर पड़ा कपड़ा हिलने लगा ।

और देखते ही देखते मोटू के अन्दर घुसा नाटू कफ़न उतार कर उठ बैठा ।

यह दूत कहां छोड़ गये मुझे ? मैं कहा हूं ? तुम लोग कौन हो ? तुम रो क्यों रहे हो ?

भूत भूत

भूत भ भ भूत

भ भ भ भ भूत !

क्यों शोर मचा रहे हो ? यह कैसे कपड़े पहना दिये हैं मुझे ? मेरी सैक्रेटरी कहां है । मेरा बंगला कहां है । मेरा गनमैन कहां है ?

इसका मरा हुआ मुर्दा उठकर बैठ गया है अबे कोई गुलेल मैन भी है तेरे पास, जो गनमैन की बात कर रहा है ।

इस कहानी के हंसा-हंसाकर दीवाना बना देने वाले हंगामों के लिये आगामी अंक में अपने प्रिय कलाकारों से मिलना न भूलिये ।

प्र० : अंगीठी में कोयला दबाकर भर देने से आँच क्यों नहीं देती ?

अशरफ अली—पटना

उ० : किसी पदार्थ के जलने के लिए वायु की अत्यन्त आवश्यकता होती है। बिना वायु के अग्नि प्रज्वलित नहीं हो सकती। केवल वायु की सहायता से ही गर्मी पैदा होती है। अतः कोयला दबाकर भरने से अंगीठी के प्रत्येक भाग में वायु सुगमता से प्रवेश नहीं कर पाती और हम पर्याप्त मात्रा में गर्मी पाने से वंचित रह जाते हैं।

प्र० : अण्डा उबालने से कड़ा क्यों हो जाता है ?

शंकर लाल—ग्वालियर

उ० : गर्मी पाकर अण्डे की सफेदी कड़ी हो जाती है और उसकी द्रवता जाती रहती है। ताप जो साधारणतया पदार्थ को पिघलाकर गर्म कर देती है, अण्डे की सफेदी को कड़ा बना देती है। यह एक विशेषता है।

प्र० : बिना चिमनी के बत्ती अधिक धुआं क्यों देती है ?

जय प्रकाश—दिल्ली

उ० : चिमनी के न रहने से बत्ती की लौ को निरन्तर वायुधारा नहीं मिलती। यही कारण है कि धुआं अधिक निकलता है और कार्बन का एक बहुत बड़ा भाग बिना जले ही निकल जाता है।

प्र० : बच्चों द्वारा स्तन से पिया जाने वाला दूध क्यों निर्विकार समझा जाता है ?

प्रकाश जुनेजा—चण्डीगढ़

उ० : दूध पर वायु का विषैला प्रभाव पड़ता है। वायु के संसर्ग में ही आकर दूध में भांति भांति के कीटाणु पैदा होने लगते हैं, परन्तु स्तनों द्वारा जब बालक दूध पीता है तो वायु का संसर्ग नहीं होने पाता और स्तन से दूध सीधा बालक के मुंह में जाता है। अतः यह दूध निर्विकार होता है।

प्र० : लकड़ी वार्निस करने से क्यों चमकती है ?

शिवचरण गोयल—पानीपत

उ० : जब तक लकड़ी पर वार्निस नहीं चढ़ाया जाता तब तक उसका ऊपरी हिस्सा छिद्रमय होता है जो प्रकाश को खींच (सोख) लेती हैं। परन्तु जब ये सूक्ष्म छिद्र पालिश से भर जाते हैं तो प्रकाश की किरणें प्रतिबिम्बित होती हैं और हमारे नेत्रों में चमक पैदा कर देती हैं।

प्र० : भारी पत्थर गीली जमीन से उठाना क्यों कठिन होता है ?

कमल कुमार—झाँसी

उ० : पृथ्वी के किसी भाग में पानी भर जाने से वहाँ से वायु निकल जाती है। पृथ्वी गीली होने से भी उसमें वायु का रहना असम्भव होता है। पत्थर पर उसके भार के साथ ही साथ वातावरण का भी दबाव अधिक हो जाता है। पत्थर के नीचे की वायु निकल जाने के कारण हमें उसे उठाने में कठिनाई प्रतीत होती है।

प्र० : आंसू क्या हैं और कैसे निकलते हैं ?

उ० : हमारे नेत्रगोलक एक प्रकार की झिल्ली से ढके हुए हैं। यह झिल्ली सदा भीगी रहती है, और इसका भीगा रहना आवश्यक भी है। ऊपरी पलक में नेत्रगोलकों के बाहर अश्रु-गुत्थियाँ होती हैं। इनसे खारी पानी निकलता है जो नेत्रगोलक को भिगोकर उन्हें स्वच्छ करता रहता है। यह जल कोने में नाक की तरफ एकत्रित हो जाता है। यहाँ एक छिद्र होता है जिससे अश्रु नाक

में भी पहुंचता है। नेत्रों से उतना ही जल निकलता है जो उन्हें गीला करने के लिए पर्याप्त होता है परन्तु जब अधिक दुख या हर्ष के कारण अधिक अश्रु बनते हैं या नेत्रों के सूजने पर अश्रु-नलिका बन्द हो जाती है तो आंसू कपोलों पर टप-टप टपकने लगते हैं। नेत्रों में जब धूल के कण या बाल आदि पड़ जाते हैं, तो अश्रु-गुत्थियाँ स्वभावतः अधिक जल निकालती हैं ताकि धूल के कण बाहर निकल जायें।

प्र० : कोयला अंगीठी में किस प्रकार जलता है ?

खुर्शीद अहमद—अलीगढ़

उ० : कोयला जलने से वायु गर्म होकर ऊपर उठती है और स्वच्छ तथा ठंडी वायु अंगीठी के नीचे के द्वार से उसमें प्रवेश करती रहती है। यह स्वच्छ वायु नीचे के जलते हुए कोयलों के संसर्ग से कार्बन डाइऑक्साइड गैस बन जाती है। जब यह कार्बन डाइऑक्साइड गैस उठकर ऊपर के अंगारों से निकलती है तो अंगीठी के ऊपर नीली ज्वालाओं के रूप में यह गैस कार्बन मोनोऑक्साइड नामक गैस में परिवर्तित हो जाती है। फिर यह कार्बन मोनोऑक्साइड नामक गैस बन जाती है। यदि अंगीठी में स्वच्छ वायु प्रवेश करने के लिए द्वार न हो तो कोयला भली-भाँति नहीं जल सकता।

प्र० : सिंडर से लकड़ी की अपेक्षा धुआं कम क्यों निकलता है ?

राम प्रकाश—देहरादून

उ० : सिंडर तथा कोक में केवल कार्बन ही रह जाता है। उनमें से वाष्पमय-पदार्थ—गैस, धुआं आदि अधिकतर पहले ही निकल जाते हैं। लकड़ी में यह बात नहीं पायी जाती। यही कारण है कि बर्तन व दिवाल आदि सिंडर से कम काले होते हैं।

प्र० : इच्छा-शक्ति को कैसे बढ़ाया जा सकता है ?

अनूप गुप्ता—दिल्ली

उ० : एक निश्चित नियम के अनुसार प्रतिदिन कार्य करने की आदत डालने से हम अपनी इच्छा-शक्ति को बढ़ा सकते हैं। हम यदि यह धारणा करें कि प्रातःकाल चार बजे उठना है तो चार बजने पर आलस्य पर आलस्य त्याग शीघ्र ही उठ जाना चाहिए अथवा किसी निश्चित समय पर कोई पुस्तक पढ़नी है तो प्रतिदिन उसी समय पर पढ़ें अथवा सप्ताह के किसी विशेष दिन कोई वस्तु नहीं खानी है तो उस दिन हम प्रयत्न करें कि वह वस्तु न खायें। प्रतिदिन व प्रति सप्ताह इस प्रकार अभ्यास करने से हमारी इच्छा-शक्ति बढ़ सकती है।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

क्यों और कैसे ?
दीवाना
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

हाकी समाचार

भारतीय हॉकी फेडरेशन ने आगामी विश्व कप के लिये हॉकी टीम तैयार करने के लिये क्रान्तिकारी कदम उठाये हैं जिन खिलाड़ियों का चुनाव हुआ वह सर्वथा नये है। कई पुराने खिलाड़ियों की छुट्टी कर दी गई जैसे अशोक दीवान, मोहिन्दर सिंह, अजीतपालसिंह, अशोक कुमार, गोविन्दा, अजीत सिंह, तथा चांद सिंह।

यहां तक कि सूची में फुलबैक असलम शेरखां तथा मुरजीत का नाम भी नहीं है। हां उनके बारे में यह कहा गया है कि अखिल भारतीय टूर्नामेंटों में उनके खेल को देखा जायेगा।

ट्रेनिंग के लिये चुने गये खिलाड़ियों की सूची निम्न है :

गोल कीपर—फर्नांडीस, क्षत्री तथा लालसिंह
राइट बैक—प्रमोद बाटला व डुंग डुंग
लैफ्ट बैक—वेंगरा तथा जयशेखरन
राइट हाफ—वीरेन्द्र सिंह, क्लॉडियस व रमेश
सेंटर हाफ—राजा शेखरन व महबूब खां
लैफ्ट हाफ—भास्करन, विश्वनाथन व डी सिल्वा
आऊट साइड राइट—फिलिप्स व चरजीत कुमार
राइटइन—प्रभाकरन व परमिन्दर सिंह
सेंटर फारवर्ड—इदरीशक व चेंगप्पा
लैफ्ट इन—जफ्फार, सुरेन्द्रसिंह व सैमुअल टोपना
लैफ्ट आऊट साइड—हरचरण सिंह व सईद अली

जिन खिलाड़ियों के खेल पर नजर रखी जायेगी व ये हैं असलम शेरखां, सुरजीतसिंह, गैबरील, आई जे सिंह, कौशिक यारमाना, खेर केट्टा, सुखतीर ग्रेवाल, वी० जे० थामस।

इन खिलाड़ियों में से ही विश्व कप टीम का चुनाव होगा। नाम पढ़ते ही आपको पता लग गया होगा कि अबकी बार भारत का प्रतिनिधित्व लगभग बिल्कुल नये खिलाड़ियों की ब्रांड न्यू टीम करेगी। देखिये क्या होता है!

प्र० : विश्व का सबसे आलराउन्डर क्रिकेट खिलाड़ी कौन है ?

उ० : इस समय तो इंग्लंड का टोनी ग्रेग ही है।

मुकेश कुमार वार्ष्णेय—डिबाई

प्र० : भूतकाल में भारत का कौन-सा क्रिकेट खिलाडी सर्वश्रेष्ठ था ? कृपया उसका इतिहास बताइये।

उ० : सी. के. नायडू (भारत के प्रथम टैस्ट कप्तान)। उन्होंने १८ इनिंग्स में कुल ३५० रन बनाये। उच्चतम स्कोर ८१ का रहा।

उनका स्कोर कार्ड देखकर शायद बहुत से पाठक यह सोचने लग गये होंगे कि यह तो कुछ भी नहीं है। उन्होंने एक भी टैस्ट सैंचुरी नहीं बनाई—लेकिन ध्यान में रखने वाली बात यह है कि भारत का वह प्रारम्भिक दौर था। सारे खिलाड़ी टेस्ट मैचों में अनुभव हीन थे। और उस समय की इग्लैंड की टीम बहुत अच्छी थी। उसके पास टैस्टों को खेलने का सर्वाधिक अनुभव प्राप्त था। उसके पास अच्छे फास्ट बॉलर थे। १९३२ के इग्लैंड दौरे के समय प्रथम श्रेणी के मैचों में उन्होंने बहुत धड़ल्लेदार बल्लेबाज़ी की। उस छोटे से टूर में उन्होंने ८० छक्के मारे थे। अब तक वहां के क्रिकेट प्रेमी उनकी बल्लेबाजी की याद करते हैं। सबसे बड़ी बात यह थी कि वह तेज गेंदबाजी से जरा नहीं घबराते थे बल्कि उनकी धुनाई क[...] अपना कर्त्तव्य समझते थे। उनका मोटो [...] "यदि तेज गेंदबाज बम्पर फेंकता है [...] बल्लेबाज का कर्त्तव्य उस पर सीधा छक[...] लगाना है, कम से कम चौका तो लगना चाहिये।" जरा आज अपने वर्तमान क्रिके[...] खिलाड़ी और निकट भूतकाल के क्रिकेट[...] को देखिये कि किसमें इतना विश्वास त[...] दम है! वास्तविकता तो यह है कि नायडू [...] बाद फास्ट बॉलरों को खेलने वाला बैटसम[...] हमारे पास पैदा ही नहीं हुआ। आज ह[...] देखते हैं कि हमारे अच्छे-अच्छे ख्याति प्रा[...] बल्लेबाज भी लीवर, आर्नल्ड तथा विलि[...] जैसे मध्यम श्रेणी के पेसमैनों के सामने किस प्रकार लड़खड़ा जाते हैं—हमारे कह[...] का सारांश यह है कि रनों की संख्या पर म[...] जाइये बल्कि उन रनों के बनाने के पी[...] बल्लेबाज का जो आक्रामक रवैय्या रहा उसे देखिये। क्वांटिटी और क्वालिटी [...] जमीन आसमान का फर्क है। यह आंक[...] कितने झूठे होते हैं इसका एक जीता जाग[...] प्रमाण देहली के रणजी प्लेयर श्री चेत[...] चौहान हैं। प्रथम श्रेणी मेंरणजी आदि मैं[...] में उनकी बल्लेबाजी धुँआधार होती है [...] दो सौ से अधिक रन बनाना उनके लिये आ[...] बात है। वे अकेले ही अपनी टीम को अपन[...] बल्लेबाजी से जिताने की क्षमता रखते हैं [...] परन्तु जब टैस्ट मैच होता है तो क्या होत[...] है ? उन्हें कई बार आजमाया गया परन्तु टैस्टों में सर्वथा असफल रहे। कुछ देर टिप[...] टिप करके गुजारते हैं और शीघ्र ही आऊ[...] हो जाते हैं। टैस्टों में उनका खेल बहुत ह[...] दयनीय रहा। अब तो यह दशा है कि शाय[...] ही उन्हें कभी टैस्टों में अवसर मिले।

नरिन्द्र कुमार 'निन्दी'—कपूरथला

प्र० : विश्वनाथ ने अपना प्रथम टैस्ट शतक कब, कहां व किस टीम के विरुद्ध बनाया था ?

उ० : विश्वनाथ ने अपना प्रथम टैस्ट शतक आस्ट्रेलिया के विरुद्ध १९६९ में कानपुर में अपने जीवन के पहले ही टैस्ट मेंबनाया था। यह शतक दूसरी पारी में उन्होंने बनाया था।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चरणदास

..लिखता हूँ चलता ही नहीं। पता नही लोगों को मेरे उपन्यास पसंद क्यों नहीं आते। अब प्यासी झील नाम से एक उपन्यास लिखा है लेकिन इसे कोई प्रकाशन छापने को तैयार नहीं होता। तुम बताओ मैं क्या करूं ?
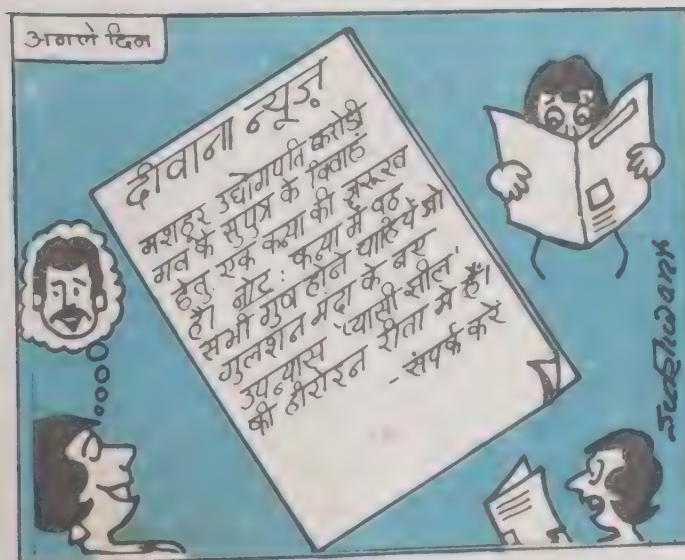
(पृष्ठ ११ से आगे)
हमारे अतिथि हैं। आप का दिया हुआ कुछ भी ग्रहण करना हमारे लिए उचित नहीं। मैं तो बहन का संदेश लेकर आया हूं कि आप जो भी चाहें, हमसे प्राप्त कर लें और व्यर्थ इतना संकट सहकर हमें पाप का भागी न बनाएं।"

शंख बोला, "मैं नागपत्नी का आभारी हूं, पर मुझे तो जो चाहिए वह नागदेवता ही दे सकते हैं, मित्र !"

नागपत्नी का भाई अपनी बहन के अपमान से खिन्न हो उठा। उसे क्रोध आ गया। लेकिन बहन के भय से वह धीमे स्वर में बोला, "तुम जानते नहीं, ब्राह्मण ! नागराज बड़े क्रोधी भी हैं ! वह तो जल्दी मनुष्यों को दर्शन भी नहीं देते। तुम बरबस उनके लिए इतना दुःख सहकर उन पर पाप चढ़ाते रहोगे। हो सकता है यह जानकर उन्हें क्रोध आ जाए और हित की जगह वह तुम्हारा अहित ही कर बैठें।"

"छि: ! छि···" शंख ने कानों पर हाथ रख लिया। बोला, 'मैं उन सदाचारी नागदेवता का यश सुन चुका हूं। तुम्हारी बात से तो मुझे अचरज हो रहा है कि उन्हें ऐसा क्रोध भी आता है ! जो भी हो, तुम जाओ। नागपत्नी से मेरा धन्यवाद कहना। अब मैं यह संकल्प लेता हूं कि जब तक नागराज स्वयं यहाँ आकर मुझे दर्शन नहीं देते, मैं निराहार ही रहूंगा !"

बात और भी बिगड़ती देखकर दूत घबरा गया। बोला, "तुम तो अनर्थ कर रहे हो, ब्राह्मण, कहीं नागराज के कोप से सचमुच तुम्हारा अनिष्ट न हो जाए !"

"अनिष्ट ही होना है, तो हो। मैं इतना ही कह सकता हूं कि ऐसे महान सदाचारी नागराज के हाथों मेरा अनिष्ट हो तो वह भी शुभ हो जाएगा।"

दूत विवश होकर चला गया।

शंख को यह सब बड़ा विचित्र लग रहा था। यह कैसी बात है ? अतिथि-मित्र ने मुझे भला इस नागराज के पास क्यों भेज दिया है। अगर पद्मनाग सचमुच ऐसा क्रोधी है तो वह महान कैसे हो सकता है ? भला वह कोपी मुझे शान्ति कैसे दे सकता है ?

कुछ समझ में नहीं आया। फिर भी उसने अतिथि को एक दिन मित्र बनाकर अपना दुःख कहा था। और उसने भी मित्र समझकर ही राह दिखाई थी। अब उससे विचलित होने की बात शंख के मन में कैसे रह सकती है ? मित्र पर संदेह करना अथवा मित्र के साथ विश्वासघात करना दोनों समान पाप हैं।

वह विश्वास के साथ गोमती के तट पर डट गया।

एक के बाद एक दिन बीतने लगा।

आसपास के नाग, नागपुत्र तथा नागकन्याएं शंख के लिए नित्य ही भांति-भांति के भोजन रख जाया करते थे, पर सब कुछ ज्यों-का-त्यों पड़ा रहता। शंख कुछ भी नहीं छूता था।

रोज ही लोग आते। उससे खाने के लिए आग्रह करते, पर शंख चुप बैठा रहता।

धीरे-धीरे छः दिन बीत गए।

निराहार बैठे शंख की तपस्या देखकर सभी घबरा उठे।

आसपास की नाग बस्ती में हलचल-सी मच गई। एक दिन बहुत-से नाग एक साथ शंख के पास पहुंचे। पूजा-सत्कार करके बोले, "आप कई दिन से यहां भूखे रहकर तपस्या कर रहे हैं। इससे हम गृहस्थों को बड़ा कष्ट होता है। हममें से कोई ऐसा नहीं है जिसके मन में किसी के अहित की बात आती हो। हममें से कोई झूठ नहीं बोलता। हमारे मन में किसी के लिए ईर्ष्या अथवा दुर्भावना नहीं है। हम सब व्यर्थ विवाद में समय नष्ट नहीं करते। अन्तिम सांस तक अपने वचन पर अडिग रहते हैं। मित्र के लिए प्राण देने में भी नहीं चूकते। अतिथि अथवा बन्धुओं को भोजन कराए बिना कभी नहीं खाते। फिर भला आप भूखों रहें और हम भोजन करें, यह कैसे हो सकता है ! नागराज पद्मनाभ हमारे भाई-बन्धु हैं। राजा हैं। आप जैसे उनके अतिथि हैं, वैसे ही हमारे भी हैं। हमारा अनुरोध मानिए।"

शंख बोला, "आप लोगों के वचन अमृत की भांति मधुर और कल्याण करने वाले हैं; किन्तु मुझे क्षमा करें। मैंने व्रत लिया है। अब तो नाग का दर्शन करके ही मैं भोजन करूंगा। आप मेरा व्रत न तुड़वाएं। इसी में आपका आतिथ्य है।"

निराश होकर सारे नाग चुप रह गए।

पन्द्रह दिन बीत जाने पर भगवान सूर्य का विमान ढोने की बारी खत्म हुई। सूर्यदेव से अनुमति लेकर पद्मनाग अपने घर आ पहुंचा।

पत्नी जब जलपान कराने बैठी तो पद्मनाग ने कहा, "सारे प्राणियों के हित की इच्छा ही सद्गृहस्थ का धर्म है। मेरे न रहने पर तुमने कोई त्रुटि तो नहीं की ? अतिथियों के स्वागत सत्कार में तत्पर तो रही हो न ? कभी आलस्य तो नहीं किया ?"

नाग-पत्नी बोली, "भला यह कैसे हो सकता है ! अपनी ओर से तो मैंने कोई आलस्य नहीं किया। हां, आज से कोई पन्द्रह दिन पहले दूर गंगा तट के एक ब्राह्मण यहां पधारे। उन्होंने मुझे अपना कोई काम नहीं बताया। मैंने बहुत पूछा, फिर भी बोले, 'मैं केवल नागराज का दर्शन करना चाहता हूं।' वह गोमती के तट पर आज पन्द्रह दिन से निराहार रहकर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्हें दर्शन अवश्य दें।"

नाग बोला, "यह कैसे सम्भव है ? मनुष्यों के लिए तो हमारा दर्शन दुर्लभ है। फिर दर्शन की इच्छा होने पर भी कोई इस तरह आज्ञा देकर मुझे कैसे बुला सकता है ?"

नागपत्नी ने मीठे स्वर में कहा, "महाक्रोधी नागराज, आप अपने को संभालिए। वह बेचारा कितनी दूर से चलकर आपके दर्शन करने आया है ! कितने दिन से निराहार व्रत लेकर बैठा है ! और आप उसे दर्शन भी नहीं देना चाहते ?"

नागपत्नी ने बिना किसी संशय के पूरी कहानी सुना दी।

पद्मनाग लज्जित होकर बोला, "तुम ठीक कहती हो, प्रिये। तुमने मुझे धर्म से विचलित होते-होते बचा लिया। यह क्रोध हमारा शत्रु है। तुमने मेरी रक्षा कर ली। मैं अभी गोमती तट पर जाकर ब्राह्मण से मिलता हूं। वह जो चाहेंगे, वही करूंगा। लेकिन यह घटना है बड़ी विचित्र !"

गोमती के तट पर निराहार बैठे शंख ने सहसा देखा कि चारों ओर से आग की ऊंची-ऊंची लपटें उठ रही हैं। आसपास जो कुछ भी था, वह जलने लगा है। देखते-ही-देखते गोमती की लहरों से भी आग की ज्वालाएं फूटीं और धू-धू करने लगी हैं।

शंख चकित होकर देखता रहा। सबसे आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसके आसपास की घास तक जलने लगी थी, बस, उसे कुछ नहीं हुआ। लपटें उसके चेहरे तक लपलपा जाती थीं, पर उसे आंच तक नहीं लगती थी।

यह कैसा चमत्कार है !

सहसा उसी समय एक भारी गम्भीर स्वर सुनाई पड़ा। "ब्राह्मण, सावधान ! तू

मदहोश
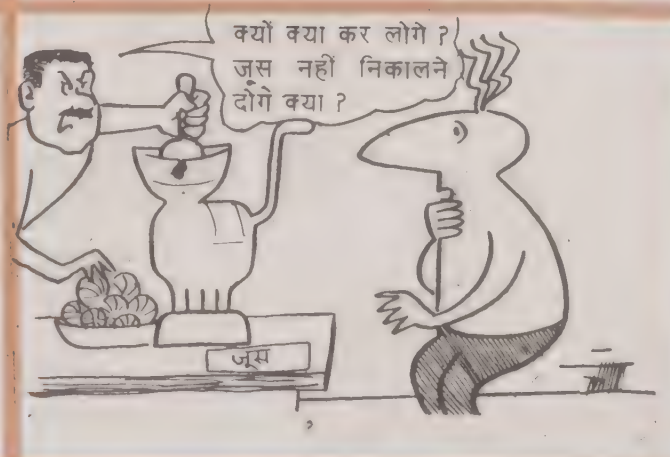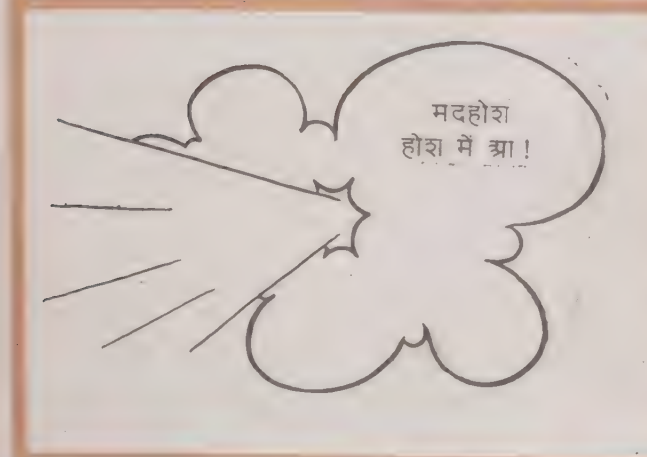
जो ज्वालाएं देख रहा है, वह मेरे क्रोध की लपटें हैं और जिस शीतल आसन पर निश्चिन्त होकर तू बैठा है, वह मेरे धैर्य और शांति का प्रतीक है। तू अपना हठ छोड़कर यहां से तुरन्त चला जा।"

शख ने निर्भय होकर कहा, "तुम हो कौन, देवता?"

"मैं ही पद्मनाग हूं! सूर्य का विमान ढोता हूं। तेरे हठ की सूचना मुझे मिली। तू जो मांगना चाहे मांग ले, और चला जा।"

"मुझे दर्शन दें, प्रभु!" शख ने विनती की।

"तू मनुष्य है। तुझे मेरा दर्शन नहीं मिल सकता। और तू जो भी चाहे, मिलेगा।"

"तो मुझे कुछ भी नहीं चाहिए, नाग-देवता! मैं यहीं दर्शन की कामना से निराहार बैठा रहूंगा। दर्शन नहीं मिले तो प्राण छोड़ दूंगा।"

नागदेवता की हंसी फिर सुनाई पड़ी। साथ ही उसका गंभीर स्वर गूंज उठा, "तो तू यह चाहता है कि मैं अपनी परम्परा तोड़ दूं, नहीं तो तेरी मृत्यु का पाप सहूं?"

"नहीं, नहीं, आप जैसे महान सदाचारी को मैं पाप का भागी नहीं बनने दूंगा। मैं तो आपसे सदाचार की ही शिक्षा लेने आया था। आप तो मुझ अभागे को दर्शन भी नहीं देते। मुझसे बड़ा पापी कौन है? मैं जीवित रहकर क्या करूंगा? फिर भी मैं आपको इस पाप से मुक्त करता हूं। हां, मेरी ओर से नागपत्नी को अवश्य धन्यवाद दें। उन्होंने मुझ मनुष्य का उपकार करने के लिए बहुत कुछ किया। आपको भी मैंने इतना कष्ट दिया, क्षमा मांगता हूं।"

उसकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि सहसा दृश्य बदल गया। आग की भयंकर लपटें गायब हो गईं। सब-कुछ पहले जैसा ही हरा-भरा हो गया। साथ ही एक सुन्दर व्यक्ति शख के सामने खड़ा होकर बोला, "आप जैसे धीर-गम्भीर और व्रती महात्मा के दर्शन करने के लिए तो मैं स्वयं ही बेचैन था। मेरा नाम है पद्मनाग!"

दोनों इस तरह स्नेह से गले मिले मानो युगों से बिछुड़े मित्र मिल गए हों।

शख ने कहा, "मुझे शान्ति नहीं मिलती, नाग देवता, मुझ पर कृपा करें। मेरे पास सब-कुछ है, फिर भी मन चंचल रहता है। क्या करूं, कुछ समझ में नहीं आता। आप महान सदाचारी हैं। मैं बहुत दूर से आपका यश सुनकर आया हूं। मेरा कल्याण करें।"

नाग हंसकर बोला, "यह प्रशस्ति उचित नहीं, ब्राह्मण देवता! मुझे तो देखते हैं, हर व्यक्ति की तरह मैं सारे लोक-धर्म निबाहता हूं। बस, यही है कि मैं दृढ़ रहकर कर्तव्य का पालन करता हूं। किसी भी लोभ से विचलित नहीं होता। जैसे भी बने, अपने आचरण में पाप नहीं आने देता। मुझे अपने इसी संसार-परिवार में सारे सुख-संतोष मिलते हैं! शान्ति मिलती है।"

सुनकर ब्राह्मण शख की आंखें खुल गईं। वह समझ गया कि उस दिन अतिथि-मित्र ठीक ही कह रहा था—"तुम जहां हो, वहीं उत्तम है। केवल सदाचार ही सबसे बड़ा धर्म है। उसी का पालन करो। शान्ति मिलेगी।" ●

फैण्टम
और कलाकृ की आदमखोर
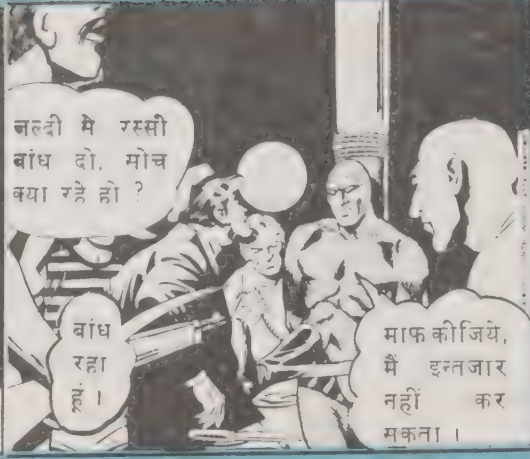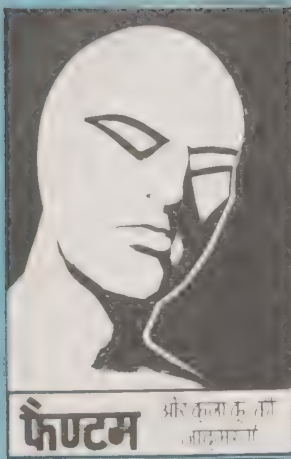
जल्दी मे रस्सी बांध दो, सोच क्या रहे हो ?
बांध रहा हूं ।
माफ कीजिये, मैं इन्तजार नहीं कर सकता ।
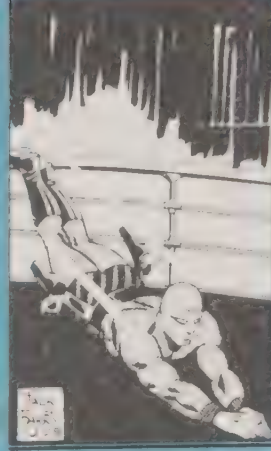
इसने मुझे ठोकर मारी है । इसे पकड़ो ।
अरे ! वह तो चला गया !
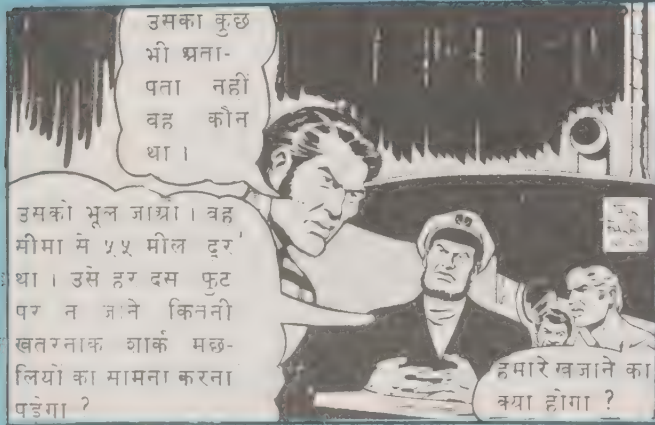
उसका कुछ भी अता-पता नहीं वह कौन था ।
उसको भूल जाओ । वह सीमा से ५.५ मील दूर था । उसे हर दस फुट पर न जाने कितनी खतरनाक शार्क मछलियों का सामना करना पड़ेगा ?
हमारे खजाने का क्या होगा ?
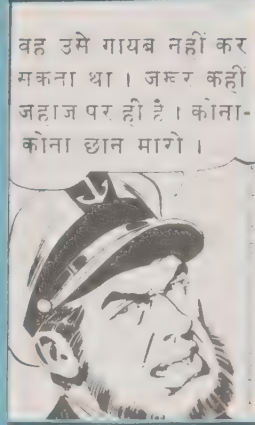
वह उसे गायब नहीं कर सकता था । जरूर कहीं जहाज पर ही है । कोना-कोना छान मारो ।
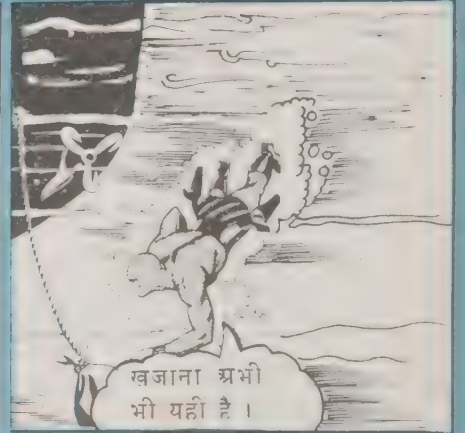
खजाना अभी भी यहीं है ।
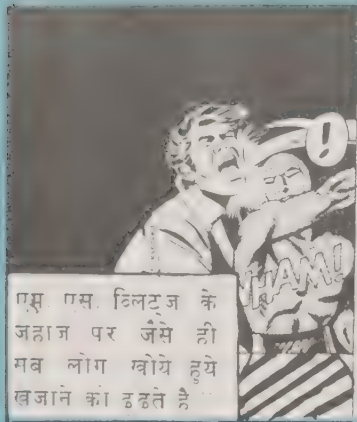
एस. एस. डिलट्ज के जहाज पर जैसे ही सब लोग खोये हुये खजाने को ढूढते है

यहां यह सब क्या हो रहा है ।
हमारे साथी ... इनको किसी ने मार डाला है ।
इनके जबाड़े पर पर भी वही निशान ... ।
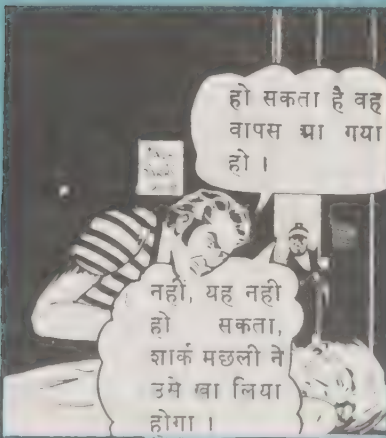
हो सकता है वह वापस आ गया हो ।
नहीं, यह नही हो सकता, शार्क मछली ने उसे खा लिया होगा ।
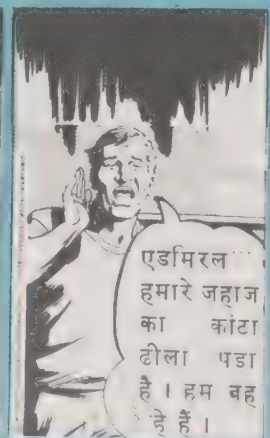
एडमिरल ... हमारे जहाज का कांटा ढीला पडा है । हम बह रहे हैं ।
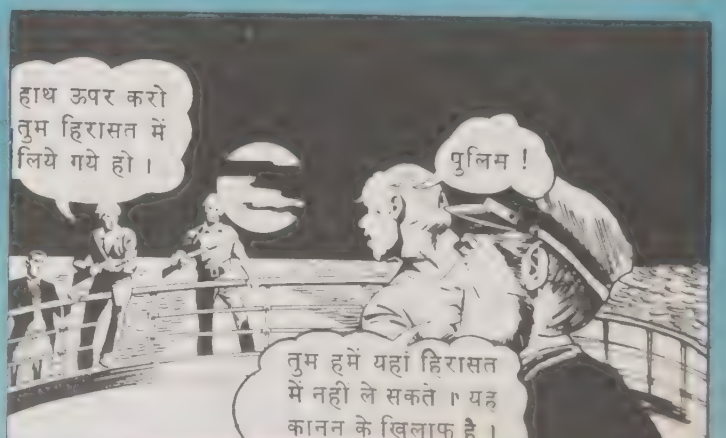
हाथ ऊपर करो तुम हिरासत में लिये गये हो ।
पुलिस !
तुम हमें यहां हिरासत में नही ले सकते । यह कानून के खिलाफ है ।

बोलते अक्षर

वाजपेयी भाषण

कंपन वृत

पलटियां कलगी

विजय कुमार जैन—दिल्ली

● कल मैं सुरेश के यहां खाने पर गया था।

सवारी के लिये क्या कोई और वाहन नहीं मिला था।

○○○○○○○○○○○○○○○

राम ख्यानी—लखनऊ

● एक डाक्टर की दुकान के बाहर बोर्ड लगा था—"बाल रोग विशेषज्ञ"।

सिर वाले बालों का या बच्चों का ?

○○○○○○○○○○○○○○○

रणजीतसिंह 'राणा'—श्रीनगर

● पिता—"बेटा तुम्हारा पेन कहां गया।" बेटा—"कल फुटबाल खेल रहा था, गिर गया।"

क्या पेन भी फुटबाल खेलने लगे हैं ?

● पहली औरत, "आजकल तो साबुन बहुत महंगा बिकता है" दूसरी औरत, "क्या कहती हो बहन, पांच रुपये किलो तो आम बिकता है।"

आम से भला साबुन का क्या मुकाबला ?

○○○○○○○○○○○○○○○

हरीश कुमार—सिरसा (हरियाणा)

● दिल्ली में आजकल हेराफेरी बहुत चल रही है।

फिल्म हेराफेरी का जिक्र तो नहीं करें आप ?

○○○○○○○○○○○○○○

रवि प्रकाश जैन—बहराईच

● लड़का मां से—"मां खाना दो पेट में चूहे कूद रहे हैं।"

खाना चूहों के लिये चाहिये या अपने लिये ?

○○○○○○○○○○○○○○

सी. राजा—असम

● "मैं जरा लड़कों को फुटबाल खिलाने जा रहा हूं तुम अकेले ही लंच कर लेना", एक मित्र ने दूसरे से कहा।

फुटबाल खाने की नौबत क्यों आ गई, भोजन कम है क्या ?

○○○○○○○○○○○○○○

रवि कान्त—गुड़गांव

● "यह लो नींबू, अपने पिताजी को काट कर दाल में डाल दो।"

किसे डालना है दाल में सही-सही बताओ।

प्रतिभा साहनी—देहरादून

● प्रतापगढ़ के राजा दुश्मनों से लोहा लेते हुए मारे गये।

राजा साहब लोहे का बिजनेस करते थे क्या ?

○○○○○○○○○○○○○○○

जोसेफ बाबा जेम्स—बम्बई

● एक व्यक्ति पान वाले से, "५५५ सिग्रेट दो।"

इतनी सिग्रेट अकेले ही पियोगे क्या ?

○○○○○○○○○○○○○○○

अर्जुनसिंह राठौर—मुरैना

● एक आदमी अपने मित्र से बोला, "जब मैं बस में बैठता हूं तो उल्टी हो जाती है।"

बस उल्टी हो जाती है या...

○○○○○○○○○○○○○○○

नरेश मलिक—जबलपुर

● फिल्म 'चितचोर' का गीत—"आज से पहले आज से ज्यादा, इतनी सुहानी इतनी मीठी, घड़ी आज तक मिली नहीं।"

घड़ी का स्वाद मीठा होता है क्या ?

○○○○○○○○○○○○○○○

जगजीतसिंह राणा—दिल्ली-३५

● "मालिक, मैंने चोरी करते हुए चौकीदार को देखा था" नौकर बोला।

समझ में नहीं आ रहा चोरी किसने की ?

○○○○○○○○○○○○○○○

कुमारी कान्ता त्रिपाठी—फिरोजपुर छावनी

● एक आदमी पड़ौसी से, "आइये, आज हमने मीट बनाया है, एक आध बोटी खाते जाओ।"

"धन्यवाद। हम तो आपकी ही बोटियां खाते हैं," पड़ौसी बोला। पड़ौसी की बोटियां खाते हो या...

○○○○○○○○○○○○○○○

गुरुमिल सिंह—हिसार (हरियाणा)

● एक मित्र ने दूसरे से कहा, "तूने मुझे तीन सौ रुपये देने थे लेकिन अब तक एक पैसा नहीं दिया।"

चलो बाकी दो सौ निन्यानवे रुपये निन्यानवे पैसे तो मिल चुके हैं तुम्हें......

○○○○○○○○○○○○○○○

दीपिका हाँडा—गाजियाबाद

● पिता बेटे से, "हमारे खाने के लिए मेज लगवा दो"।

आज भोजन खाने का इरादा नहीं है क्या... मेज ही चलेगी ?

○○○○○○○○○○○○○○○

यशपाल जैन—जयपुर

● जीव विज्ञान की छात्राएं मेंढक की हड्डियां निकाल रही थीं तभी एक छात्रा चिल्लाई—"मेरी हड्डियाँ निकल आई।"

छात्रा की हड्डियाँ या मेंढक की ?

○○○○○○○○○○○○○○○

कमलेश कुमार—मण्डी (हि० प्र०)

● एक लड़का अपनी मां से बोला, "मां मुझे धोकर कपड़े देना।"

लड़के को धोना है या कपड़ों को ?

○○○○○○○○○○○○○○○

कुमारी कीर्ति मन्यदा—नागपुर

● आशा, "नीलम तुम्हारे पेपर कैसे हुए ?"

नीलम, "सो-सो।"

सोने को कह रही हो या...

○○○○○○○○○○○○○○○

भूपेन्द्रसिंह—टोमाना (पिथोरागढ़)

● एक लड़का अपने मित्र से, "तेरा कोट और पेंट मैच कर रहे हैं।"

क्रिकेट का या हाकी का ?

○○○○○○○○○○○○○○

चिरंजीलाल जैन—तिनसुकिया

● "लाटरी निकल आने के बाद तो वह चैन की बंसी बजा रहा है।"

साईकिल की चैन की या घड़ी की ?

○○○○○○○○○○○○○○

अरुण कुमार—बस्तर

● "बस अब जाने दो" आदमी बोला।

बस को बांध रखा है क्या ?

○○○○○○○○○○○○○○

केवल सर्वश्रेष्ठ प्रश्न पर ५ रु० का नगद इनाम दिया जायेगा।

अपने वाक्य केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

अर्थ-अनर्थ
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

ज़रा हंसिये

हरीकाका की तबीयत खराब रहती थी। अन्त में एक विशेषज्ञ डाक्टर को दिखाया। जांच-पड़ताल हुई, डाक्टर ने दवा लिखी और साथ ही फीस मांगी अस्सी रुपए। हरिकाका बोले—"अजी वाह डाक्टर साहब ! इत्ता-सी बात के अस्सी रुपए ? और फिर इत्ते रुपए तो मैं छः महीने में भी नहीं चुका पाऊंगा।"
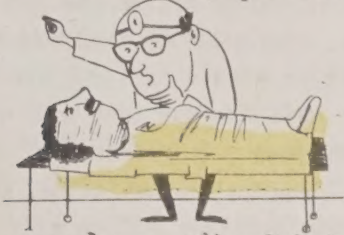
डाक्टर ने कहा—"पैसे नहीं हैं तो बड़े डाक्टर को क्यों दिखाते हो ?"

हरिकाका ने स्पष्टीकरण दिया—"अजी वाह डाक्टर साहब ! इत्ता भी नहीं समझते जब तबीयत की बात होती है तो मैं पैसे की तरफ नहीं देखता।"

क्लर्क होते हुए भी धीरजलालजी ने बमुश्किल अपने एक लड़के को वकील और दूसरे को डाक्टर बनाया। दोनों लड़के अपने-अपने पेशे में लग गए तो धीरजलालजी के साथियों ने कहा, "चलो, अब तो तुम्हारे बुरे दिन बीत गए।"

धीरजलालजी ने स्थिति साफ की, "अरे भाई अब तो और भी मुसीबत में फंस गया हूं कल एक मोटर साइकिल वाला मुझसे आ टकराया। अब डाक्टर बेटा कहता है कि मैं आपकी चोट का इलाज करूंगा और वकील बेटा कहता है कि आप चोट को और बढ़ा लीजिए ताकि उस मोटर साइकिल वाले पर मैं हर्जाने का दावा कर दूं।"

साप्ताहिक टेस्ट हो रहे थे। प्रोफेसर ने जमुना प्रसाद से पूछा, "एच० एन० ओ-थ्री से तुम क्या समझते हो ?"

जमुना प्रसाद ने सोचने का भाव जताते हुए कहा, "बस सर, बिलकुल मेरी ज़बान पर है, लेकिन..."

"तब तो तुम उसे उगल ही दो क्योंकि वह नाइट्रिक एसिड है।" प्रोफेसर ने सलाह दी।

प्रोफेसर सा० अपने ख्यालों में इतना खोए रहते मानो घर से उन्हें कोई मतलब ही न हो। एक दिन पत्नी बोली, "पता है हमारे मुन्ना ने चलना शुरू कर दिया ?"

प्रोफेसर का ध्यान कहीं और था। पूछा, "कब से ?"

"अजी एक हफ्ता हो गया है।"

"ओह ! तब तो बहुत दूर निकल गया होगा।"

चौथी कक्षा के छात्र टोनी ने सिद्ध कर दिया कि छोटे बच्चे भी आज के जमाने में कितने व्यावहारिक हो गए हैं। हुआ यूं कि टोनी स्कूल-हाल के चिकने फर्श पर फिसल गया और उसके घुटने की चमड़ी छिल गई। शिक्षिका ने उसे पुकारा, "देखो टोनी, याद रखो, बड़े बच्चे रोते नहीं हैं।"

'बड़े बच्चे' ने जवाब दिया, "मैं रोने वाला नहीं हूं, मैं तो स्कूल पर दावा दायर करूंगा।"

महाजनो येन गतः

महावीर और सदानन्द दो भाई थे, कानपुर में रहते थे और दाल का व्यापार था। एक दिन उन्हें दिल्ली के एक अस्पताल से तार मिला कि उनके वृद्ध पिता मृतप्राय हैं। महावीर ने सदानन्द से कहा, "दोनों के जाने से लाभ ही क्या ! तुम जाओ और फौरन तार से खबर करना कि पिताजी की तबीयत कैसी है। यह तो तुम जानते ही हो कि एक तार में कम-से-कम आठ शब्द आ सकते हैं।" अगले दिन महावीर को सदानन्द का तार मिला, "पिताजी समाप्त। दाह संस्कार कल। अरहर १८/१, उड़द २५/२।"

रेलवे स्टेशन के बाहर मिट्टी के सामान की दुकान सजी थी और दुकानदार बैठे-बैठे ऊंघ रहा था। एक अमरीकी पर्यटक वहां से गुजरा और उसने दुकानदार को जगाकर पूछा, "तुम्हें पता है यह तुम क्या कर रहे हो ?"

"मैं ये मिट्टी के बर्तन बेच रहा हूं, और क्या ?" दुकानदार ने कहा।

"यह कोई तरीका है बेचने का ? अरे, चुस्ती से बैठो और आवाज लगाओ कि ये दुनिया के सबसे सुन्दर बर्तन हैं, सबसे बढ़िया मिट्टी से बने हैं, वगैरह वगैरह।"

"उससे क्या होगा ?"

"होगा क्या, तुम ज्यादा माल बेचोगे, ज्यादा मुनाफा कमाओगे।"

"उससे क्या होगा ?"

उससे अपना व्यापार बढ़ा सकोगे, हर रेलवे स्टेशन के बाहर बढ़िया दुकानें खोल सकोगे।"

"फिर ?"

"फिर बड़ा कारखाना लगा सकते हो, विदेशों में माल बेच सकते हो, दुनिया भर में दुकानें खोल सकते हो।"

"फिर ?"

"फिर कश्मीर में एक 'हाउस बोट' ले सकते हो। और स्विट्जरलैंड में एक बंगला बनवा सकते हो।"

"फिर ?"

"फिर क्या, आराम से बैठ सकते हो।"

"वही तो कर रहा हूं।" दुकानदार ने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया।

पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय...

एक मछेरा जाल बुन रहा था। प्रोफेसर बेखयाली मुग्ध-भाव से खड़े देख रहे थे और सोच रहे थे, "वाह ! क्या बारीकी से छोटे-छोटे छेदों को बांधा है !"

—सनम

पराई बेटी

वह सोफे पर बैठी-बैठी पत्र पढ़ रही थी। पत्र की एक-एक पंक्ति एक-एक अक्षर पर उसकी नसें फड़क उठती थीं। वह बेचैनी में पहलू बदले जा रही थी। सोफे के स्प्रिंग च...र...र...र...चर...करके कराह रहे थे। उसका भार ज्यादा नहीं था। लेकिन जब प्रत्येक अक्षर पर गुस्से से कांपकर वह पहलू बदलती थी, तो उसका सारा जोर सोफे पर एकत्रित हो जाता था। ज्यों-ज्यों वह पत्र पढ़ती जाती त्यों-त्यों उसका शरीर सिहरन से तन-तन जाता। निचला होंठ दांतों तले पड़ा कट रहा था...पढ़ते-पढ़ते जब उसकी मुट्ठियां गुस्से से भिंच गई तो वह पत्र को मसलने लगी। चेहरा लगातार तनता जा रहा था। उसने पत्र को एक बार जोर से मुट्ठी में मसला और अनजाने में ही उसका निचला होंठ दांतों तले कट गया...लहू बहने लगा। उसने मुचड़े हुए पत्र को नीचे फेंका। कटे हुए होंठ पर उंगली रखी तो वह लहू से लाल हो गई। उसने हथेली से होंठ साफ किया। माथे पर झुक आई लट को पीछे हटाया और ऊपर चढ़ गई। कमीज को नीचे करते हुए वह सोफे से उठकर खड़ी हो गई।

गुस्से से उसके होंठ फड़फड़ा रहे थे। वह अब भी हथेलियों को आपस में रगड़े जा रही थी। वह झुकी और नीचे फेंका हुआ पत्र उठा लिया। मुचड़े हुए पत्र को खोलकर देखा तो उसे किसी बुढ़िया के चेहरे की तरह झुर्रियों से भरा हुआ पाया। उसने फिर पत्र को मसलकर वहीं फेंक दिया। वह गुस्से में अपनी सुध-बुध खो बैठी थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। बस यों ही नजरें ऊपर उठाकर दीवारों पर लगी तस्वीरों को देखने लगी! एक फोटो पर उसकी नजर टिक कर रह गई। कुछ पल यों ही फोटो को घूरने के पश्चात् ही वह आगे बढ़ी और फोटो को उतारकर हाथ में ले लिया।

'तेरी किस्मत ही ऐसी थी री—तू कोई गुनाह करके आई थी, जो तुझे किसी का प्यार न मिल सका।' फोटो को घूरते हुए उसके मुंह से निकला। उसके होंठों पर कुछ इस तरह की मुस्कान थी मानो कोई अपना सारा जोर लगाकर हंसना चाहता हो पर खिसिया कर रह जाय। 'जब तू ही नहीं रही तो तेरी तस्वीर का यहां क्या फायदा...तेरी किस्मत फूटी...ले अब तू भी फूट जा।' और उसने हाथ ऊपर उठाकर पूरे जोर से फोटो को नीचे पटक दिया। शीशा टूटकर चूर-चूर हो गया। वह झुकी और उसने फ्रेम को उठाकर एक बार फिर पटक दिया—क्योंकि फ्रेम में कैद फोटो अभी उसी तरह जीवित थी...चेहरे पर चेचक के मोटे-मोटे दाने...सांवला रंग और उलझे हुए बालों वाली दस वर्षीया। बालिका की फोटो अब भी उसका मुंह चिढ़ा रही थी। उससे रहा न गया। फोटो उठाकर फ्रेम अलग किया और बेदर्दी से फोटो के टुकड़े-टुकड़े करके उसे शीशे की तरह बिखेर दिया। पत्र अब भी मुचड़ा हुआ वहीं पड़ा था। फोटो के टुकड़े उस पत्र पर जा पड़े।

शीशा टूटने की आवाज जब रसोई में खाना बना रही अम्मा के कानों तक पहुंची तो रोटी बेलते-बेलते उठकर भागीं। बेलन अब भी उनके हाथों में ही था।

'अरी...ओ संजू...क्या टूट गया है री ?' वे कमरे में घुसती हुई बोलीं। जो फर्श के टुकड़े और फटी फोटो देखी उनकी समझ में कुछ न आया। संजू तरफ गुमसुम फर्श पर नजरें गड़ाए थी। अम्मा ने उसके पास जाकर उसे झंझ —'कैसे टूट गया है री तेरी फोटो— लगता है कि तूने खुद तोड़ी है।' उ झुककर फटी हुई फोटो के टुकड़े उठा लि टुकड़े उठाते-उठाते जब उनकी नजर नीचे मुचड़े हुए कागज पर पड़ी तो वे चौंक उठ

'अरी! यह खत आज आया था ...क्या लिखा है री मेरे लाल ने!' उन्ह पत्र को पहचान लिया था क्योंकि इंगलै से आने वाला पत्र इसी रंग का होता और वह उनके अपने बेटे का ही आता थ संजू को चुप खड़ी देख उन्हें हैरानी हु 'क्या बात है री...तू बोलती क्यों नही बता न क्या लिखा है खत में।' संज अम्मा के हाथ में पकड़े हुए पत्र पर न डाली और फिर अंगड़ाई लेती हुई निःश्वास छोड़कर बोली—'लिखा है—म बीमार हैं...और...मुझे भी बुला भेजा है

'तेरी मम्मी बीमार है री...क्या ज्य बीमार है ?'' अम्मा ने घबराए हुए स्व पूछा।

संजू उनकी घबराहट पर खीझ उठ 'हां बहुत बीमार है...बस मरने ही वाली

'क्या बकती है री तू...अपनी म बारे में ऐसा कहते शर्म नहीं आती तुझे

'शर्म...हुंह...कैसी शर्म अम्मा— मेरी मां है और किसके लिए मुझे आए।' संजू ने उपहास उड़ाने वाले स्व कहा तो अम्मा बुड़बुड़ करती वहां से च गई। उन्हें मालूम था कि अब कुछ कहा वह फिर दुःखी हो जाएगी और न जाने क्या बोलने लगे। उन्हें उससे सहानुभूति हमदर्दी थी। तभी तो उसे अपने पास हुआ था। पाल-पोसकर इतनी बड़ी दिया। पढ़ाया-लिखाया। आखिर अपनी पोती तो थी। मां-बाप ने उसे ठुकरा तो वह कैसे उसकी उपेक्षा कर सकती बच्ची ही तो थी वह उस समय। भला बाप बच्चों को यूं ही छोड़कर जाते हैं

अम्मा के जाने के बाद संजू ने हुई फोटो के टुकड़े उठाए। और न क्या सोचकर उन्हें अपनी अल्मारी में आई। चिटकनी चढ़ाकर वह वापस सो आ धंसी। अम्मा की बातें अब भी

दिमाग में कौंध-कौंध कर उसे परेशान कर रही थी। क्यों उसे शर्म आए, माँ के बारे में कुछ कहते हुए—कौन कहता है वह उसकी माँ है। कौन कहता है उसने मुझे जन्म दिया। क्या कसूर था मेरा जो वह मुझे अपने साथ न ले गई। छोटी को वह क्यों ले गई थीं। इसीलिए न कि वह सुन्दर थी, उसके चेहरे पर कोई दाग नहीं थे। और मेरा कसूर केवल इतना ही था कि मैं काली थी''बदसूरत थी''मेरा रंग सांवला था और चेहरे पर चेचक के दाने थे उस समय। तो क्या सांवले रंग और चेहरे पर चेचक के दाने वाले बच्चे माँ-बाप पर कोई अधिकार नहीं रखते''? मम्मी को अपने रूप का घमंड है''अपनी शिक्षा का घमंड है''और वह अपने आपको बड़ी-ऊंची सोसायटी में उठने-बैठने वाली और ऊंचे घराने की समझती हैं। तभी तो पापा पर जादू डाल रखा है उन्होंने। वे तो उनके हर शब्द को वेद-वाक्य समझते हैं। मम्मी के मुंह से निकली आवाज जैसे उनके लिए लक्ष्मण रेखा होती है। वे चाहकर भी उसे लांघ नहीं पाते। उसकी बात का विरोध करना तो दूर''चेहरे पर शिकन तक डालने में हिचकते हैं। फिर वे उस समय मम्मी से मुझे साथ ले चलने को कैसे कहते—जब''

उसे याद है आठ वर्ष पहले का वह दिन, जब वे सब सामान तैयार करके बाहर बरामदे में लगा चुके थे—सभी तैयार होकर खड़े थे''अच्छे-अच्छे कपड़े पहन रखे थे—मम्मी ने छोटी ने और पापा ने''वह खुद भी तो उस समय नया सूट पहन कर खड़ी थी। कितनी उमंग में थी वह उस समय''वह फूली नहीं समाती थी''अपने पड़ोसी बच्चों को जब उसने गली के मोड़ पर झांकते देखा, तो उसे कितना गर्व महसूस हुआ था। होता भी क्यों न! वे इंगलैंड जा रहे थे—जहाँ उसकी मम्मी को आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर बनने के लिए बुलाया गया था। कुछ ही दिन पहले वहां से चिट्ठी आई थी और मम्मी ने पापा से तैयारी करने को कहा था। उसी दिन पापा ने अपने आफिस इस्तीफा भेज दिया था''वो तो मैं जानती हूं—पापा को अपनी नौकरी छोड़ने का कितना गम था''चाहे वे एक मामूली से क्लर्क ही थे पर फिर भी उन्हें नौकरी बड़ी अच्छी लगती थी। वे उसी में ही संतुष्ट थे क्योंकि घर का सारा खर्च तो मम्मी चला रही थीं। वह यहां के गर्ल्ज कालिज में प्रिंसिपल थीं—उन्हें बड़ी इच्छा थी कि वे विदेश में सर्विस करें''इसीलिए उन्होंने इंगलैंड में प्रोफेसर बनने की अपनी इच्छा पूरी कर ली''वह पी० एच० डी० थीं इस लिए कोई दिक्कत न आई।

उसने पड़ोस के एक बच्चे को बतला दिया था कि वे इंगलैंड जा रहे हैं—जहाज पर चढ़कर। जहाज का नाम सुनकर वे हैरान रह गए थे और उसकी तरफ हसरत भरी निगाहों से देखने लगे थे''इसीलिए आज सभी बच्चे आस-पास गली में ही मंडरा रहे थे। मम्मी सारा सामान एक जगह इकट्ठा करके गिनने लगीं और जब उस पर नजर पड़ी तो उसे सजी-संवरी देखकर चकित रह गई। उनकी आंखें लाल हो गई। माथे पर शिकनें ही शिकनें पड़ गई। वह तो उनका यह रूप देखकर सहम गई थी। उसका सारा उल्लास छूमंतर हो गया था। वह अभी तक उनकी वह घूरती नजर भूल नहीं पायी, जिसने उसके शरीर को सूखे पत्ते की तरह कंपाकर रख दिया था। वह कांप रही थी और मम्मी से नजरें बचाने की कोशिश में थी—जब मम्मी की आवाज हथोड़े की तरह उसके कानों में ठनक उठी थी—'तुझे किसने कहा था आज नए कपड़े पहनने को?' जब वह सहमी सी चुपचाप गुमसुम खड़ी रही तो मम्मी ही बोलीं थीं—'बताती क्यों नहीं री''कहाँ जा रही है तू यह सोलह शृंगार करके?'

उसे मालूम है मम्मी जानबूझकर पूछ रही थीं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि वह भी उनके साथ जा रही है। पर फिर भी डरते-डरते धीमे से फुसफुसाई थी—'आपके साथ इंगलैंड जाना है।' वह तो यही समझे थी कि वह अपने मम्मी पापा के साथ जा रही है। छोटी भी तो नए कपड़े पहने खड़ी थी। उससे क्यों न पूछा गया था कुछ भी। यह उसकी समझ में नहीं आया था उस समय''तब उसकी उम्र भी केवल दस वर्ष ही थी। वह क्या जानती थी कि एक ही माँ-बाप के बच्चों में भी अन्तर होता है। उसका दिमाग यह सब सोच ही नहीं पाया था उस समय।

उसे याद है जब उसने कहा था कि आपके साथ जा रही हूं तो मम्मी उंगलियां नचाते हुए गुस्सैली आवाज में कड़की थीं—'वाह-वाह रानी भी इंगलैंड जा रही है—जरा मुंह तो देख अपना—यह शक्ल तेरी अंग्रेजों के साथ रहने लायक होगी''तू हमारी हंसी उड़वाना चाहती है क्या वहाँ जाकर''चल भाग जा अन्दर''साथ जाएगी यह।' वह कुछ न समझ पायी थी। मम्मी की बातों से उसे बस इतना ही आभास हुआ था कि उसे साथ नहीं ले जाया जा रहा। वह इसी अहसास और मम्मी की गुस्से से कांपती आवाज़ से घबराकर रोती हुई अन्दर भाग गई थी''

कमरे में जाकर वह देर तक रोती रही थी। उसे याद है जब मम्मी के पास खड़ी अम्मा ने मम्मी से कहा था—'तू इसे साथ क्यों नहीं ले जाती?' तो मम्मी ने अम्मा को भी वही जवाब दिया था, 'इस मनहूस को साथ ले जाकर वहाँ हंसी उड़वानी है क्या अपनी।'

उस समय अम्मा तो बस, मन मसोस कर रह गई थी। कुछ देर बाद जरा हिम्मत करके बोली थीं—ले जाती तो अच्छा था। मेरा क्या भरोसा, मैं कब''' और मिन्नतों का कोई असर न होते देख उनके धैर्य का बांध टूट गया था। 'न ले जाएगी तो क्या मैं उसे पाल भी न सकूँगी''अरी देखना कुछ ही दिनों में इसे तेरे से भी सुन्दर न बना दिया तो तू मुझे कहियो।' मम्मी हंसकर रह गई थीं। अम्मा की अपनी तरफदारी करती बातों से वह और भी ज्यादा भावुक होकर रोने लगी थी। आँसू थे कि थमने का नाम ही नहीं लेते थे।

तभी एक टैक्सी गेट पर आकर रुकी थी और पापा नीचे उतरे थे। सामान टैक्सी में रख दिया था। जब मम्मी और छोटी टैक्सी में बैठ गई थीं तो पापा ने उसे वहाँ न देख मम्मी से पूछा, तो वे बोली थीं—'होगी यहीं कहीं''तुम्हें क्या''आओ बैठो अन्दर, आगे ही लेट कर दिया है''टैक्सी लाने में ही दो घण्टे लगा आए।' पापा चुप रह गये थे। अम्मा उसे बुलाकर बाहर ले आई थीं। वह तो आती न थी पर उन्होंने कहा था कि पापा से तो मिल ले। वह रोती-रोती पापा के पास जाकर खड़ी हो गई थी। उन्होंने सजल नयनों से उसके सिर पर हाथ फेरा था और फिर उनके टैक्सी में बैठते ही सब कुछ आंखों से ओझल हो गया था। वह अम्मा की टांगों से लिपटकर रोने लगी थी।

फिर अन्दर कमरे में जाकर वह रोते-रोते अपने आपको शीशे में देखने लगी थी।

उसके काले रंग और चेचक के दानों पर बस, मम्मी का ही घृणा उठती थी और किसी को नहीं। इसीलिए तो सब उससे प्यार करते थे, सिवाए मम्मी के उस दिन अम्मा उसे बाजार ले गई थीं और उसका मन बहलाने के लिए उसे मिठाइयां लेकर दी थीं। एक स्टूडियो से उसकी फोटो भी खिचवाई थी। उस दिन न जाने क्यों उसे अपने आपसे घृणा-सी हो गई थी उसे अपनी फोटो फूटी आंख न सुहाती थी ठीक वैसे ही जैसे मम्मी को उसकी शक्ल सूरत वह तो कई बार फोटो फाड़ने का प्रयत्न कर बैठी थी। पर हर बार अम्मा उसके हाथ से फोटो छीन लेतीं थीं कुछ दिनों बाद जब उसने अपने आपको परिस्थितयों में ढाल लिया था या यूं कहो कि समय ने खुद उसे बदल दिया था उसे अपनी फोटो से प्यार हो गया था उसने उसे फ्रेम करवाकर दीवार पर टांग दिया था। जब भी कभी मम्मी या पापा का पत्र आता था, उसे रुलाई आ जाती थी साथ न ले जाने के कारण नहीं बल्कि किसी भी पत्र में उसका जिक्र तक न होने के कारण पापा के पहले एक-दो पत्रों में उसका नाम था पर बाद में वह भी नहीं।

'क्या आज भूख हड़ताल कर रखी है सुबह से न कुछ खाया न पिया ऐसा भी क्या कि।' अम्मा की आवाज से उसकी विचार-तन्द्रा भंग हुई तो वह चौंककर उठ बैठी—'आं चलो मैं अभी आती हूं।' वह धीरे से फुसफुसाई आवाज मुंह से निकल ही नहीं पा रही थी, अनजाने में ही गला रुन्ध गया उसकी आंखें भी नम हो गई थी अम्मा उसके पास ही कुर्सी खींचकर बैठ गईं और उन्होंने जब प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा तो उसे रुलाई आ गई।

'रोती क्यों है ? न रो मेरी बच्ची न रो !'

लेकिन वह बेकाबू हो रोये जा रही थी —'मैं नहीं जाऊंगी अम्मा मैं नहीं जाऊंगी।'

'जाएगी क्यों नहीं री तेरे पापा ने बुलाया है वो कोई गैर लोग थोड़े ही हैं तेरी मां बीमार है तुझे।'

'अम्मा' वह लगभग चीख सी पड़ी थी। जब भी अम्मा उसे उसकी मम्मी की याद दिलाती है तो वह तड़प उठती है— 'किसे तुम मेरी मां कह रही हो अम्मा किसे कह रही हो कोई मेरी मां नहीं है।'

'तू पागल हो गई है री ?'

'हां अम्मा—मैं पागल हो गई हूं तुम ही बताओ अम्मा, जो मां अपने बच्चों को ठुकरा दे वह भी मां रह जाती है ? नहीं अम्मा मेरी मां तो बस आप ही हैं, जिसने पाला-पोसा हो वह मां कहलाती है अम्मा अब फिर कभी जो उसे मेरी मां कहा तो मैं तुम से रूठकर दूर चली जाऊंगी।

'तेरी मर्जी है री मैं तो कहती हूं— तू चली जाएगी तो अच्छी रहेगी मेरा तो एक पांव हर वक्त 'कबर' में रहता है क्या मालूम कब।'

'नहीं अम्मा ! ऐसा मत कहो मैं अब उनके पास हर्गिज नहीं जाऊंगी। जो भी होगा देखा जाएगा अब सारी उम्र तेरे पास ही रहूंगी अम्मा।'

अम्मा की आंखों में उमड़ता हुआ प्यार आंसू बनकर फूट पड़ने को आतुर था। उन्होंने संजू को कसकर अपने सीने से लगा लिया। ●

चना कुरमुरा

दुकानदार ने ग्राहक से कहा, "इस तोते का दांया पांव उठाएंगे तो यह 'नमस्ते' कहेगा,और बांया पांव उठाएंगे तो कहेगा 'अच्छा फिर आइएगा।'

ग्राहक ने जिज्ञासा प्रकट की, "और अगर दानों पांव एक साथ उठा दूं तो ?"

"तो मैं गिर नहीं जाऊंगा, बेवकूफ !" तोते ने दुकनदार को बोलने का अवसर ही नहीं दिया।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

"इतने उदास क्यों हो ?" श्रीमान जी की धनी चाची की मृत्यु पर उनके मित्र ने पूछा, "वैसे भी तुमने उस बुढ़िया की कोई खास परवाह तो की नहीं।"

"की तो नहीं" श्री मानजी ने परेशानी से कहा, "लेकिन पिछले पांच वर्षों से मैंने उसे पागल सिद्ध करके पागलखाने में भर्ती करा रखा था। अब पता चला कि उसने अपनी सारी सपत्ति मेरे नाम कर रखी है। समस्या यह है कि अब मुझे यह सिद्ध करना है कि उसकी दिमागी हालत दुरुस्त थी।"

श्रीमानजी को उस चमक-दमक वाली दुकान के फर्श पर एक रुपए का सिक्का दिखाई दिया। उन्होंने नजर चुरा कर इधर-उधर देखा, अपना रुमाल निकाला और सिक्के पर डाल दिया। और फिर रुमाल के साथ सिक्का उठाने लगे। लेकिन सिक्का मजबूती से फर्श से चिपका रहा। इतने ही में सेल्समेन आता दिखाई दिया तो श्रीमानजी हड़बड़ाकर खड़े हो गए।

"माफ कीजिएगा," सेल्ससेन ने कहा, "अब आपको हमारे प्रसिद्ध गोंद का इत्मीनान हो गया न ! एक बोतल दूं ?"

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

अपने दांतों की सुरक्षा के लिये साल में दो बार दन्त-चिकित्सक को दिखाओ और फिर करो अपने मन की।

गुमनाम है कोई- गुमनाम प्रतियोगिता का सही हल- धर्मेन्द्र और अमिताभ के साथ है अरुणा इरानी : हमें खेद है कि किसी भी पाठक ने इसका सही हल नहीं भेजा।